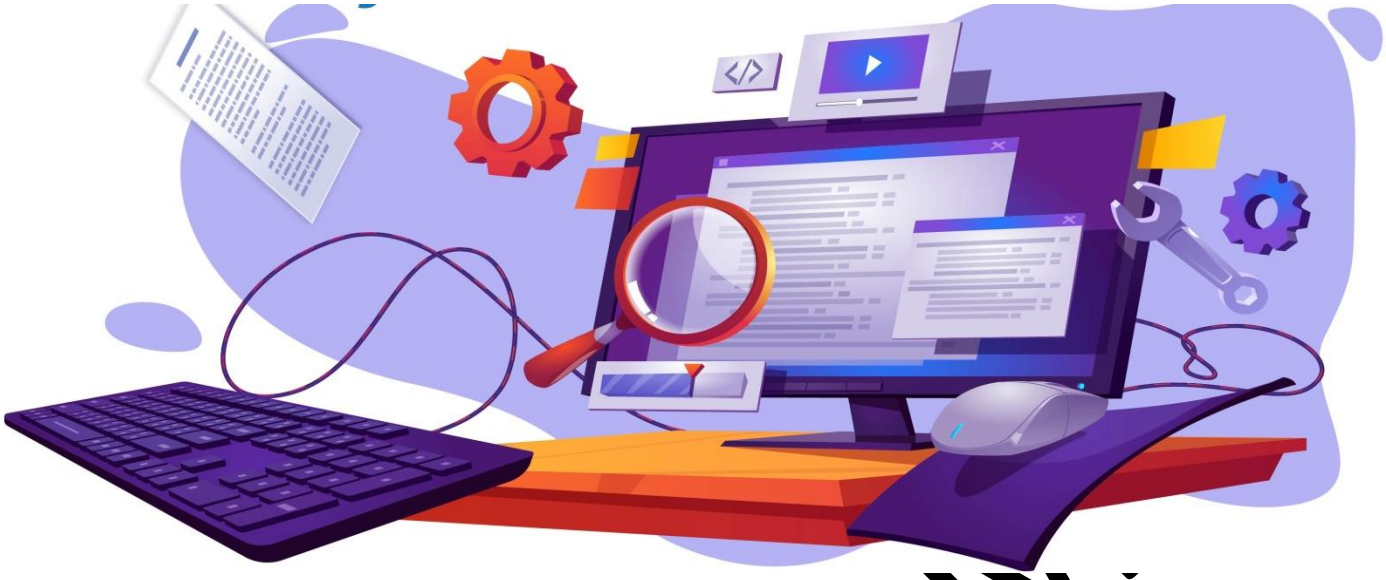

BASIC

ACCOUNTING

I.COM(COMMERCE)

COMPLETE SELF LEARNING MANUAL

DHIRAJ SIR

VIDYA TOPPER'S COMMERCE CLASSES AMBA

AMBA

BY :- DHIRAJ SIR

M.COM, MBA,RM,

-:ACCOUNTING:-

Accounting (लेखांकन) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पैसों से जुड़ी सभी जानकारी को व्यवस्थित तरीके से संभाला जाता है। इसमें सबसे पहले सभी लेन–देन (जैसे खरीदना, बेचना, खर्च करना, कमाई होना, संपत्ति बनाना या कर्ज़ लेना) को सही तरीके से लिखा (*Record*) जाता है। इसके बाद इन लेन–देन को अलग–अलग श्रेणियों में बाँटा (*Classify*) जाता है और फिर उनका सारांश (*Summarize*) बनाकर पूरे व्यवसाय की स्थिति सामने लाई जाती है। अंत में, इन जानकारियों की व्याख्या (*Interpret*) करके यह बताया जाता है कि व्यवसाय को लाभ (*Profit*) हुआ या हानि (*Loss*), साथ ही उसकी आर्थिक स्थिति यानी संपत्ति (*Asset*) और देनदारियाँ (*Liabilities*) क्या हैं। सरल शब्दों में कहें तो, *Accounting* मतलब किसी भी *Business* का पूरा–पूरा पैसों का हिसाब–किताब रखना।

Accounting is a process in which all money-related information is managed in a systematic way. First, all financial transactions (such as buying, selling, spending, earning, creating assets, or taking loans) are properly recorded. After that, these transactions are classified into different categories, and then a summary is prepared to show the overall position of the business. Finally, this information is interpreted to find out whether the business has earned a profit or suffered a loss, and also to know its financial position in terms of assets and liabilities. In simple words, Accounting means keeping a complete record of all money-related activities of a business.

 उदाहरण

मान लो राहुल नाम का एक छात्र अपनी छोटी कॉपी–पेन की दुकान चलाता है।

1 पहला दिन उसने ₹1,000 में पेन और कॉपियाँ खरीदीं।

2 दूसरा दिन उसने वो सामान ₹1,500 में बेच दिया।

3 तीसरा दिन उसने ₹100 बिजली का बिल भरा।

अब राहुल को ये सब बातें याद रखना मुश्किल होगा,

इसलिए वह *Accounting* की मदद लेता है।

✍ *Accounting* में राहुल क्या करेगा

पहले वह हर लेन–देन लिखेगा (*Recording*)

→ जैसे सामान खरीदा सामान बेचा खर्च किया

फिर वह उन्हें अलग–अलग खातों में बाँटेगा (*Classifying*)

→ खरीद *(purchase)* का खाता, बिक्री *(sales)* का खाता, खर्च *(exp)* का खाता

उसके बाद सारांश बनाएगा (*Summarizing*)

→ कुल खरीदी ₹1000, बिक्री ₹1500, खर्च ₹100

अब वह नतीजा निकालेगा (*Interpreting*)

→ ₹1500 − (₹1000 + ₹100) = ₹400 लाभ (*Profit*)

 आसान शब्दों में समझाने वाली लाइन

Accounting में बताती है कि हमने कितना खर्च किया, कितना कमाया, और अंत में फायदा हुआ या नुकसान।"

-:OBJECTIVES OF ACCOUNTING:-

Accounting का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि व्यापार में कितना लाभ (*Profit*) या हानि (*Loss*) हुआ और व्यापार की वित्तीय स्थिति (*Financial Position*) क्या है।

लेकिन इसके अलावा भी कई उद्देश्य होते हैं

1. लेन–देन को रिकॉर्ड करना (*Recording Transactions:-* व्यापार में रोज़ जो भी पैसों से जुड़े काम होते हैं जैसे खरीद, बिक्री, खर्च, प्राप्ति — उन्हें सही क्रम में लिखना।

2. परिणाम जानना (*Knowing Profit or Loss:-* साल के अंत में यह पता लगाना कि व्यापार में लाभ हुआ या हानि

3. वित्तीय स्थिति जानना (*Knowing Financial Position:-* साल के अंत में यह पता लगाना कि व्यापार के पास कितनी संपत्ति (*Assets*) और कितनी देनदारियाँ (*Liabilities)* हैं।

DHIRAJ SIR-AMBA

4. भविष्य की योजना बनाना (*Planning for Future:-Accounting* की मदद से पुराने आंकड़ों का विश्लेषण करके भविष्य के लिए बेहतर निर्णय लिए जा सकते हैं।

5. नियंत्रण रखना (*Controlling Business Activities:-* लेखांकन से यह देखा जा सकता है कि कहाँ खर्च ज़्यादा हो रहा है और कहाँ सुधार की ज़रूरत है।

6. कानूनी और टैक्स कार्यों में मदद (*Legal and Tax Purpose:-* सरकार को टैक्स देने और कानूनी रिकॉर्ड रखने में *Accounting* मदद करती है।

7. जानकारी प्रदान करना (*Providing Information:- Accounting* मालिक, निवेशक, बैंक, और अन्य संबंधित लोगों को व्यापार की सही स्थिति बताती है।

-:BASIC ACCOUNTING TERMS:-

GOODS-माल

जो वस्तुएं व्यापार में बेचने के लिए खरीदी जाती हैं, वे माल (*Goods*) कहलाती हैं। अगर कोई वस्तु व्यापार में स्वयं उपयोग के लिए खरीदी जाती है, तो वह माल नहीं होती, बल्कि संपत्ति (*Asset*) कहलाती है।

The items that are purchased for sale in business are called Goods. If an item is purchased for personal use in business, it is not considered Goods but rather an Asset.

माल (*Goods*)की विशेषताएं

⇒ व्यापार से संबंधित होना चाहिए :- वह वस्तु जिसे व्यापारी बेचता है, वही उसका माल कहलाएगा।

Must be related to business – The item that a trader sells is considered as goods.

⇒ पुनः बिक्री के लिए खरीदी जाती है : किसी वस्तु को उपयोग के लिए नहीं बल्कि बेचने के लिए खरीदा जाता है।

Purchased for resale – An item is bought not for personal use but for selling.

CLOSING STOCK- अन्तिम रहतिया

साल के अंत तक जो माल (सामान) अभी तक नहीं बिका है, वह हमारा *Closing Stock* कहलाता है

At the end of the year, the goods that have not been sold yet are called Closing Stock.

उदाहरण

मान लीजिए आपने साल भर में कुल 1000 पेन खरीदे और 800 पेन बेच दिए। तो बचे हुए 200 पेन अभी तक नहीं बिके हैं।यही 200 पेन आपका *Closing Stock* (अन्तिम स्टॉक) कहलाएगा।

Suppose you bought a total of 1000 pens during the year and sold 800 pens So the remaining 200 pens have not been sold yet. These 200 pens are called your Closing Stock.

इसे क्यों जानना जरूरी है?

Closing Stock जानना इसलिए जरूरी होता है क्योंकि इससे हमें यह पता चलता है कि साल के अंत में कितना माल बचा है। इससे हमें यह पता चलता है कि माल का कितना मूल्य अभी भी हमारे पास जमा है, जिसे अगले साल में बेचा जा सकता है। *It is important to know the Closing Stock because: It tells us how much stock is left at the end of the year. It tells us the value of the goods still with us, which can be sold in the next year.*

⇒ भारत में आमतौर पर 2 तरह के वित्तीय वर्ष माने जाते हैं

- कैलेंडर वर्ष 1 जनवरी से 31 दिसंबर तक
- वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से अगले वर्ष 31 मार्च तक

OPENING STOCK प्रारम्भिक रहतिया

जो सामान (माल) पिछले साल बेचने के बाद भी गोदाम में बचा रह गया,और नया साल शुरू होते समय वह सामान स्टोर में मौजूद हो, वही माल *Opening Stock* कहलाता है।इसे नए साल के पहले दिन गिना जाता है जैसे 1 अप्रैल या 1 जनवरी।

"The goods that remained in the warehouse even after being sold last year, and are still present in the store at the beginning of the new year, are called Opening Stock. It is counted on the first day of the new year – like 1st April or 1st January."

व्यापार की स्थिति	*Opening Stock*

DHIRAJ SIR-AMBA

नया बिज़नेस	हो भी सकता है, नहीं भी
चल रहा बिज़नेस	हमेशा रहेगा, पिछले साल का *Closing Stock* ही होगा

STOCK:- रहतिया

ऐसा सामान (माल) जो किसी तारीख तक न तो बेचा गया हो और न ही इस्तेमाल किया गया हो, लेकिन वह सामान व्यवसाय के पास पड़ा हो। "*Goods that have neither been sold nor used by a certain date but are still lying with the business are called stock.*

Stock (स्टॉक)	*Opening Stock* (प्रारंभिक स्टॉक)	*Closing Stock* (अंतिम स्टॉक)
किसी भी समय पर मौजूद माल	साल की शुरुआत में जो माल बचा होता ळे	साल के अंत में जो माल बचा होता है
सामान्य शब्द है (किसी भी दिन का)	यह साल के पहले दिन (जैसे 1 अप्रैल) को होता है	यह साल के अंतिम दिन (जैसे 31 मार्च) को होता है
उदाहरण 10 जून को दुकान में 60 किलो चावल हैं → यह स्टॉक है	उदाहरण 1 अप्रैल को 100 साबुन हैं → *Opening Stock*	उदाहरण 31 मार्च को 30 साबुन बचें हैं → *Closing Stock*

PURCHASES- क्रय

क्रय का मतलब होता है किसी वस्तु को खरीदना, जब एक व्यापारी किसी वस्तु को खरीदता है, ताकि वह उसे बाद में बेचे, तो उसे क्रय कहा जाता है।

Purchase " means to buy an item. When a merchant buys an item with the intention of selling it later, it is called "purchase."

उदाहरण

मान लीजिए, एक व्यापारी है जो बिस्कुट बेचता है। उसका व्यापार बिस्कुट बेचना है। अगर वह अपने व्यापार को चलाने के लिए किसी दुकान से 500 पैकेट बिस्कुट खरीदता है, तो उसे क्रय कहा जाएगा।

Example: Let's say there is a merchant who sells biscuits. His business is selling biscuits. If he buys 500 packets of biscuits from a shop to run his business, it will be called a "purchase

CASH PURCHASES- नकद क्रय

जब कोई व्यापारी माल खरीदते समय ही पूरा पैसा चुका देता है, यानी माल के साथ–साथ पैसा भी दे दिया जाता है, तो उसे नकद क्रय कहा जाता है *When a merchant pays the full amount at the time of purchasing goods — that is, the payment is made along with receiving the goods — it is called a cash purchase.*

मान लीजिए, आप एक दुकानदार हैं और आप किसी थोक व्यापारी (*Whole Seller*) से 100 पैकेट बिस्कुट खरीदने गए।आपने बिस्कुट लिए और उसी समय सभी का पूरा भुगतान (जैसे ₹5,000) नकद या ऑनलाइन कर दिये। यह खरीदारी नकद क्रय कहलाएगी

Example: Suppose you are a shopkeeper and you go to a wholesaler to buy 100 packets of biscuits. You take the biscuits and immediately pay the full amount (say ₹5,000) in cash or through an online transaction. This type of purchase is called a cash purchase.

CREDIT PURCHASES- उधार क्रय

जब कोई व्यापारी सामान तो अभी ले लेता है, लेकिन उसका पैसा बाद में देता है, तो इसे उधार क्रय कहते हैं *When a merchant takes the goods now but pays for them later, it is called a credit purchase.*

मान लीजिए, आप किराना की दुकान चलाते हैं। आपने एक थोक व्यापारी से 100 किलो चावल खरीदा। लेकिन आपने पैसा अभी नहीं दिया।आपने कहा "पैसे 15 दिन बाद दूँगा।" तो इस तरह की खरीद को उधार क्रय कहा जाएगा *Suppose you run a grocery shop. You buy 100 kilograms of rice from a wholesaler.But you do not pay immediately. You say, "I will pay after 15 days." This type of purchase is called a credit purchase.*

PURCHASES RETURNS- क्रय वापसियाँ

जब कोई व्यापारी किसी सामान को बेचने के लिए खरीदता है, और बाद में वो सामान खराब, टूटा–फूटा, गलत या कम निकले, तो उस खराब सामान को वापस कर देना क्रय वापसी (*Purchase Return*) कहलाता है।

DHIRAJ SIR-AMBA

When a merchant buys goods for selling, but later finds that the goods are defective, broken, incorrect, or in less quantity, and returns them — it is called a Purchase Return.

उदाहरण :- रामू काका मंडी से 50 बोरी चावल खरीद के लाए। जब उन्होंने चावल खोला, तो देखा कि 5 बोरी में तो कंकड़–पत्थर मिला हुआ है। अब रामू काका ने वो 5 बोरी वापस कर दीं। यही हुआ क्रय वापसी (*Purchase Return*)। *Ramu Kaka bought 50 sacks of rice from the market. When he opened them, he found that 5 sacks had stones and pebbles mixed in. So, he returned those 5 sacks. This is called a Purchase Return.*

SALES-विक्रय

जब कोई व्यापारी अपने पास मौजूद माल (जैसे कपड़े, किराना, मोबाइल आदि) को किसी ग्राहक को बेचता है और उसके बदले में राशि प्राप्त करता है (नगद या उधार में), तो इसे विक्रय कहते हैं।

"When a trader sells the goods available with him (such as clothes, groceries, mobiles, etc.) to a customer and receives an amount in return (either in cash or on credit), it is called a 'Sale'."

उदाहरण

⇒ यदि दुकानदार ने ग्राहक को ₹1,000 में मोबाइल बेचा और तुरंत पैसे ले लिए :- यह नगद विक्रय कहलाएगा।

⇒ यदि दुकानदार ने ग्राहक को ₹1,000 का मोबाइल दे दिया, लेकिन ग्राहक ने कहा कि वह बाद में दूँगा :- यह उधार विक्रय कहलाएगा।

SALES RETURNS- विक्रय वापसी

जब कोई व्यापारी (*Seller*) किसी ग्राहक को माल बेचता है और ग्राहक को वह पसंद नहीं आता, या माल में कोई कमी, टूट–फूट या गड़बड़ी होती है, तो ग्राहक वह माल वापस कर देता है। इस तरह की माल की वापसी को ही बिक्री वापसी (*Sales Return*) कहते हैं। *When a seller sells goods to a customer and the customer does not like the goods, or if there is any defect, damage or fault in the goods, the customer returns them. This type of return of goods is called a Sales Return.*

बिक्री वापसी के कारण (*Reasons for Sales Return*)

- माल खराब या टूटा हुआ हो
- माल का साइज, रंग या क्वालिटी ठीक न हो
- ग्राहक को गलत माल डिलीवर कर दिया गया हो
- समय पर माल न पहुंचा हो
- माल की मात्रा में गड़बड़ी हो (कम या ज्यादा)

राम ने मोहन को ₹10,000 के कपड़े उधार पर बेचे। बाद में मोहन को कपड़े की क्वालिटी पसंद नहीं आई, तो उसने ₹2,000 के कपड़े वापस कर दिए। इस स्थिति में ₹2,000 की बिक्री वापसी हुई।

Ram sold clothes worth ₹10,000 to Mohan on credit. Later, Mohan did not like the quality of the clothes and returned clothes worth ₹2,000. In this case, ₹2,000 is a Sales Return.

ASSETS- सम्पतियाँ

जब हम किसी व्यवसाय की बात करते हैं, तो उसके संचालन के लिए जो भी चीज़ें आवश्यक होती हैं, जैसे कारखाना, फर्निचर, मशीनरी, प्रिंटर, नगद रोकड़, बैंक में रोकड़ आदि, वे सभी सम्पत्ति कहलाती हैं। ये चीज़ें व्यवसाय के काम को सुनिश्चित और सकारात्मक रूप से चलाने में मदद करती हैं। *When we talk about a business, the things that are necessary for its operation, such as factories, furniture, machinery, printers, cash in hand, cash in the bank, etc., are all called **Assets**. These things help in running the business efficiently and positively.*

अगर इसे दूसरे शब्दों में कहें, तो सम्पत्ति वह कोई भी वस्तु हो सकती है जो व्यवसाय को वर्तमान में या भविष्य में लाभ प्राप्त करने में मदद करती है। यानी, वह चीज़ जो व्यवसाय के लिए मूल्यवान हो और जिसका उपयोग लाभ कमाने के लिए किया जा सके, वह सम्पत्ति मानी जाती है।

To put it in other words, an asset is any item that helps the business earn profits either in the present or in the future. That is, anything that is valuable to the business and can be used to generate profit is considered an asset.

DHIRAJ SIR-AMBA

-:NON-CURRENT ASSETS/FIXED ASSETS/LONG-TERM ASSETS

गैर चालू सम्पतियॉ। स्थायी सम्पतियॉ

गैर–चालू सम्पत्तियाँ वे सम्पत्तियाँ होती हैं जो व्यापार में लंबे समय (12 महीने से अधिक) के लिए रखी जाती हैं। जिन्हें बेचने के लिए नहीं खरीदा जाता। जिनका उद्देश्य व्यापार की सुविधा और संचालन में सहायता करना होता है।

Non-current assets are those assets:

- *which are kept for long-term use in the business (more than 12 months),*
- *which are not purchased for selling,*
- *and which help in the smooth running and operation of the business.*

उदाहरण के रूप में :- अगर कोई दुकान मशीन खरीदता है जिससे वह रोज़ माल तैयार करता है, तो वह मशीन गैर–चालू सम्पत्ति है, क्योंकि वह उसे बेचने के लिए नहीं बल्कि उपयोग के लिए खरीदी गई है। *If a shop buys a machine that is used daily to produce goods, then that machine is a non-current asset, because it is not bought for selling but for regular use in the business.*

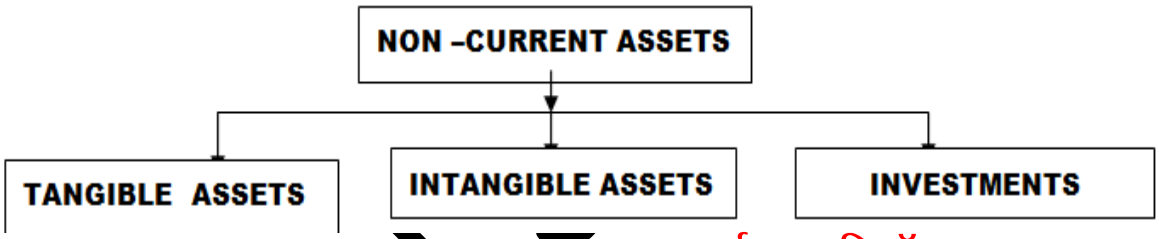

TRANGIBLE ASSETS- मूर्त सम्पतियॉ

Tangible Assets वे सम्पत्तियाँ होती हैं जिन्हें छूकर महसूस किया जा सकता है (मूर्त होती हैं)। जिनका भौतिक अस्तित्व (*Physical Existence*) होता है। जिन्हें व्यापार में लंबे समय तक उपयोग किया जाता है।

सरल शब्दों में :- ऐसी सम्पत्तियाँ जो दिखाई देती हैं और जिनका व्यापार में उपयोग होता है, उन्हें *Tangible Assets* कहा जाता है।

Tangible Assets are those assets:

- *which can be touched and felt (they have physical form),*
- *which have physical existence,*
- *and which are used in the business for a long period of time.*

सम्पत्ति का नाम (हिंदी)		उपयोग (*Use*)
भूमि	*Land*	व्यापार स्थल के लिए
भवन	*Building*	ऑफिस या गोदाम के लिए
मशीनरी	*Machinery*	प्रोडक्शन के लिए
उपकरण	*Equipment*	काम को आसान बनाने के लिए
फर्नीचर	*Furniture*	ऑफिस फर्निशिंग के लिए
वहन	*Vehicle*	सामान ले जाने के लिए
कंप्यूटर	*Computer*	ऑफिस वर्क के लिए
सॉफ्टवेयर (दीर्घकालिक)	*Software (Long-term)*	सिस्टम संचालन के लिए

INTANGIBLE ASSETS-अमूर्त सम्पतियॉ

Intangible Assets वे चीज़ें होती हैं जिन्हें आप छू नहीं सकते, लेकिन वे आपके बिज़नेस के लिए बहुत कीमती होती हैं।

DHIRAJ SIR-AMBA

Intangible Assets are things that you cannot touch, but they are very valuable for your business.

मुख्य विशेषताएँ

- कोई फिजिकल रूप नहीं होता *They have no physical form*
- दीर्घकालिक होती हैं (1 साल से ज़्यादा समय तक काम आती हैं) *They are long-term (used for more than 1 year)*
- कंपनी के लाभ और पहचान को बढ़ाती हैं *They enhance the company's profits and identity*

उदाहरण	मतलब
Goodwill	कंपनी की अच्छी छवि जो कस्टमर विश्वास से बनी हो
Trademark	किसी ब्रांड का लोगो या नाम (जैसे: *Nike* ✔ चिन्ह)
Patent	कोई विशेष आविष्कार जिसे सरकार से अधिकार मिले हों
Copyright	किताब, गाना, मूवी पर अधिकार
Brand Name	ब्रांड का नाम (जैसे: *Pepsi, Apple*)

-:INVESTMENTS:- निवेश

Investment का मतलब है कोई भी ऐसा पैसा जो एक व्यवसाय ने लंबी अवधि (1 साल से ज्यादा) के लिए दूसरे व्यवसायों या स्कीमों में लगाया हो ताकि उस पर ब्याज, या लाभ मिल सके *"Investments" means – any amount of money that a business has put into other businesses or schemes for a long period (more than 1 year) in order to earn interest,, or profit from it.* उदाहरण (*Example*)

उदाहरण	क्या निवेश किया गया है?	समय सीमा
किसी दूसरी कंपनी के शेयर खरीदे	शेयर	2 साल
सरकार के बॉन्ड खरीदे	सरकारी बॉन्ड	5 साल
जमीन खरीदी, भविष्य में बेचने के लिए	अचल संपत्ति	3 साल
किसी सहायक कंपनी में पैसा लगाया	*Subsidiary Investment*	लंबी अवधि

? क्यों किया जाता है यह निवेश?

- अतिरिक्त पैसे का उपयोग करने के लिए
- भविष्य में अधिक रिटर्न पाने के लिए
- कंपनी की स्थिति मजबूत करने के लिए
- दूसरी कंपनियों में नियंत्रण पाने के लिए

CURRENT ASSETS- चालू सम्पतियॉ

Current Assets वो संपत्तियाँ होती हैं जो 1 साल के अंदर नकद में बदल सकती हैं, या जिनका उपयोग 1 साल के अंदर हो जाता है, या जो बिज़नेस के रोज़मर्रा के काम में आती हैं।

Current Assets are those assets:

- *which can be converted into cash within one year,*
- *or which are used up within one year,*
- *or which are used in the day-to-day operations of the business.*

क्यों जरूरी हैं *Current Assets*

बिज़नेस को रोज़ के खर्चों (जैसे स्टाफ की सैलरी, सामान खरीदना) के लिए तुरंत पैसे चाहिए होते हैं।
इसलिए हमें ये जानना जरूरी होता है कि हमारे पास कितनी ऐसी चीज़ें हैं जो हम जल्दी नकद में बदल सकते हैं। इससे बिज़नेस की *Liquidity* (पैसे की उपलब्धता) पता चलती है।

वस्तु का नाम	राशि (₹)	क्या 1 साल में नकद या उपयोग हो सकता है?	*Current Asset*\
नकद (*Cash*)	₹10,000	हाँ :- तुरंत नकद	☐ हाँ
बैंक में पैसा (*Bank Balance*)	₹20,000	हाँ :- तुरंत निकाला जा सकता है	☐ हाँ
ग्राहकों से उधारी (*Debtors*)	₹15,000	हाँ :- 1 साल में पैसा मिल जाएगा	☐ हाँ

DHIRAJ SIR-AMBA

स्टॉक (*Inventory*)	₹30,000	हाँ :-बेचा जाएगा और पैसा मिलेगा	□ हाँ
एडवांस किराया (*Prepaid Rent*)	₹5,000	हाँ :- खर्च 1 साल में होगा	□ हाँ
कंप्यूटर	₹25,000	□ – रोज़ काम में आता है लेकिन जल्दी नहीं बेचा जाएगा	□ नहीं
बिल्डिंग	₹1,00,000	□ – लंबे समय के लिए है	□ नहीं

LIABILITIES- दायित्व

बिज़नेस की वह ज़िम्मेदारी (दायित्व), जिसमें उसे किसी बाहरी व्यक्ति या संस्था को पैसा चुकाना होता है। यह पैसा कर्ज़, उधारी या बकाया खर्चों के रूप में होता है, जिसे भविष्य में चुकाना होता है। इसे हिंदी में दायित्व या बकाया कहते हैं।

It is the obligation or liability of a business where it has to pay money to an external person or organization. This money is in the form of loans, credit, or outstanding expenses, which must be paid in the future.

अपने शब्दों में :- इसे साधारण भाषा में समझें तो व्यवसाय में बहुत बार अत्यधिक पैसा की आवश्यकता होती है। इसलिए व्यवसायी अन्य व्यक्तियों से ऋण लेता है। ऋण लेने के बाद व्यवसायी , पैसा भविष्य में चुकाने का वादा करता है तो जितना पैसा भविष्य में चूकआएगा व्यापार और व्यापारी के लिए वह दायित्व कहलाता है जैसे मान लिया जाए व्यापार को चलाने के लिए व्यवसायी ने रामू से 50000 उधार लिया भविष्य में वह 50000 रामू को वापस करेगा 50000 व्यवसाय के लिए दायित्व होगा

CLASSIFICATION OF LIABILITIES

Non- current liabilities	*Current liabilities*	*Contingent Liabilities*

NON-CURRENT OR LONG-TERM LIABILITIES

गैर चालू या दीर्घकालिक दायित्व

दीर्घकालिक दायित्व (*Non-Current / Long-Term Liabilities*) का मतलब है वो कर्ज़ या पैसे जो किसी कंपनी को 1 साल से ज़्यादा समय बाद चुकाने होते हैं।

Long-term liabilities (or non-current liabilities) refer to those debts or obligations that a company has to repay after more than one year.

इसे ऐसे समझिए, जैसे अगर आपने किसी से कर्ज़ लिया है और वो कर्ज़ आपको अगले एक साल में चुकाना नहीं है, बल्कि आपको उसे अगले 5–10 साल में चुकाना है, तो वो कर्ज़ दीर्घकालिक दायित्व कहलाएगा। *Think of it like this: if you've taken a loan and you don't have to repay it within the next one year, but instead over the next 5 to 10 years, then that loan is considered a long-term liability.*

मान लीजिए, आपने अपने घर की ज़मीन गिरवी रखकर ₹10 लाख का कर्ज़ लिया और बैंक से कहा कि मैं यह ₹10 लाख अगले 10 साल में चुकाऊंगा। तो यह ₹10 लाख का कर्ज़ दीर्घकालिक दायित्व हो जाएगा।

दायित्व का नाम	हिंदी में अर्थ	उदाहरण (गांव की भाषा में)
Long-Term Bank Loan	लंबी अवधि का बैंक से लिया गया कर्ज	मान लीजिए रामू किसान ने अपने ट्रैक्टर के लिए बैंक से ₹5 लाख का कर्ज लिया है, जो वो 5 साल में चुकाएगा।
Debentures	ऋण पत्र	जैसे कोई कंपनी गाँव के लोगों से ₹10–10 हज़ार लेकर कहती है कि 7 साल बाद ब्याज के साथ लौटाएंगे। ये देनदारी *debenture* कहलाती है।
Mortgage Loan	गिरवी रखकर लिया गया कर्ज	मान लो हरिया ने अपनी ज़मीन गिरवी रखकर ₹15 लाख का लोन लिया है, जो वो 10 साल में चुकाएगा।

CURRENT OR SHORT-TERM LIABILITIES

चालू या अल्पकालिन दायित्व

DHIRAJ SIR AMBA

ऐसी देनदारियाँ (उधार या कर्ज़) जो कंपनी को 1 साल के अंदर चुकानी होती हैं, उन्हें *Current Liabilities* या *Short-Term Liabilities* (अल्पकालिक दायित्व) कहते हैं।

Such obligations (credit or loans) that a company has to repay within one year are called Current Liabilities or Short-Term Liabilities.

जैसे गाँव में आप किसी से उधार लेते हैं और कह देते हैं भैया, अगली फसल तक पैसा लौटा दूंगा तो इसका मतलब है कि आप एक साल से पहले वो पैसा चुकाने वाले हैं। ऐसा ही होता है *Current Liability* कृ यानी छोटा कर्ज, जो जल्दी चुकाना है।

दायित्व का नाम	हिंदी में अर्थ	उदाहरण (गांव की भाषा में)
Creditors (Accounts Payable)	लेनदार / व्यापारिक उधार	दुकान से बीज या खाद उधार लिए, जो फसल कटने पर चुकाने हैं।
Short-Term Bank Loan	बैंक से छोटा अवधि का कर्ज़	बैंक से ₹50,000 का लोन लिया, जो 6 महीने में लौटाना है।
Bills Payable	देय बिल / उधारी बिल	किसी से उधार पर माल लिया और वादा किया कि 3 महीने में पैसा देंगे।
Outstanding Expenses	बकाया खर्च	जैसे मजदूरी या बिजली का बिल जो अभी तक नहीं चुकाया गया है, पर अगले महीने चुकाना है।

CONTINGENT LIABILITIES- सम्भावित या आकस्मिक दायित्व

A contingent liability is one which arises on the happening of an uncertain event . it is not an actual liability . सम्भावित दायित्वों से अभिप्राय ऐसे दायित्वों से है जिनका भुगतान किसी विशेष घटना के घटित होने पर दिया जाता है। अतः इनका भुगतान सम्भावित होता है अर्थात् जो करना भी पड़ सकता है और न करना भी पड़ सकता है।

उदाहरण :-

⇒ *Court Case* (मुकदमा) :- अगर किसी कंपनी पर केस चल रहा है और फैसला उसके खिलाफ हो गया, तो उसे जुर्माना भरना पड़ सकता है। तो अभी वह जुर्माना *Contingent Liability* है।

⇒ *Guarantee* दी है किसी को :- आपने किसी को लोन लेने में गारंटी दी, और अगर वह लोन नहीं चुकाता, तो आपको भरना पड़ेगा। तो यह भी एक *Contingent Liability* है।

DEBTORS- देनदार

ऐसे लोग या कंपनियाँ जिन्होंने हमसे उधार में सामान खरीदा है और अभी तक उसका पैसा नहीं चुकाया है। यानि वो ग्राहक (*Customer*) हमारे उधारी में माल या सेवा ले चुके हैं, लेकिन हमें अभी तक पेमेंट नहीं किया है।

"*Customers who have bought goods or services from us on credit but have not paid yet.*"

⇒ मान लीजिए आप एक व्यापारी हैं और आपने रमेश को ₹10,000 का माल उधार पर बेचा है।

 अब रमेश *Debtor* है और ₹10,000 की रकम आपसे लेने वाली है

⇒ मान लीजिए विद्या टॉपर्स कॉमर्स नाम की आपकी कोचिंग है। आपने 3 छात्रों को ₹5000 की कोचिंग दी है और कहा कि वो अगले महीने पेमेंट करेंगे ये तीनों अभी तक पैसे नहीं चुकाए हैं, इसलिए ये तीनों आपके *Debtors* हैं। कुल *Debtors* = ₹15,000

CREDITORS- लेनदार

ऐसे व्यक्ति या कंपनी जिनसे हमने उधार पर (*credit* में) सामान या सेवा खरीदी है और जिनका भुगतान हमें बाद में करना है। यानी हमारे व्यापार में जब हम माल या सेवा खरीदते हैं और उसका पैसा तुरंत नहीं देते, तो जिससे खरीदा है वह हमारा *Creditor* कहलाता है।

In our business, when we purchase goods or services and do not pay immediately, the person or company from whom we bought is called our Creditor

मान लीजिए आपकी दुकान है और आपने मोहन ट्रेडर्स से ₹10,000 का स्टेशनरी सामान उधार पर खरीदा। आपने सामान तो ले लिया, लेकिन पैसे बाद में देने हैं। तो मोहन ट्रेडर्स आपके लिए *Creditor* है। और आपको ₹10,000 चुकाने हैं यह आपकी देयता (*Liability*) है।

DHIRAJ SIR-AMBA

VOUCHERS- प्रमाणक

*A written document in support of a business transaction is a called voucher .it is on the basis of vouchers that business transactions are recorded in the books of account ..*जब माल का क्रय विक्रय या धन का लेन–देन किया जाता है तो इसको प्रमाणित करने के लिए जो प्रपत्र *(documents)* तैयार किये जाते हैं उन्हें प्रमाणक कहा जाता है।

अपने शब्दों में :-जब कोई भी फर्म या कम्पनी समान *(goods)*का क्रय विक्रय करती है समान विक्रय करने के पश्चात जब विक्रेता के द्वारा क्रेता को बिल दिया जाता है उसे ही *voucher* कहते हैं

DRAWINGS- आहरण

जब कोई *business* का मालिक (*proprietor/partner*) अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए नकद ,माल बिज़नेस से निकालता है, तो उसे *Drawings* कहा जाता है। *When a business owner (proprietor/partner) withdraws cash, goods, from the business for personal use, it is called Drawings.*

उदाहरण

मान लीजिए रामू काका का एक किराने की दुकान है। अब रामू काका उस दुकान से

⇒ ₹500 नकद निकालकर अपने घर में बहू को दे देते हैं बेटा ये घर खर्च के लिए रख ले

⇒ दुकान से 5 किलो चीनी निकाल लेते हैं, घर में मेहमान आने वाले हैं ब्याह में काम आएगी

ये सब जो रामू काका ने दुकान (बिज़नेस) से अपने पर्सनल इस्तेमाल के लिए लिया, उसे ही *Drawings* कहते हैं।

DEPRECIATION- ह्रास

Depreciation means reduction in the value of fixed assets due to wear and tear , obsolescence ,effluction of time or accident सम्पत्ति के प्रयोग होने के कारण अथवा उसकी टूट–फूट, घिसावट या समय व्यतीत होने आदि के कारण वर्ष के अन्त में उसके मुल्य में जो कमी हो जाती है, उसे ही 'ह्रास' कहा जाता है।

अपने शब्दों में :- किसी संपत्ति के लगातार प्रयोग होने के कारण, समय बीतने के कारण ,टूट–फूट के कारण उसके मूल्य में जो भी कमी आ जाता है उसे ही 'ह्रास' कहा जाता है। राजू ने 1 साल पहले एक टेलीविजन 30000 में खरीदा वर्तमान में इसका बाजार मूल्य 12000 लगाया गया तो यहां पर टेलीविजन का वैल्यू 18000 कम हो गया तो यहां पर 18000 'ह्रास' कहलायेगा

उदाहरण :- किराना दुकान वाले चाचा का ह्रास
गांव में रामू चाचा की किराना दुकान है।
उन्होंने ₹20,000 खर्च करके एक लोहे की अलमारी खरीदी जिसमें वो सामान रखते हैं।
हर दिन अलमारी का दरवाज़ा खुलता–बंद होता है, धूप–बरसात लगती है।
5 साल बाद अलमारी जंग खा गई और अब उसकी हालत खराब हो गई।
अब कोई ₹5,000 से ज़्यादा देने को तैयार नहीं है।
₹20,000 – ₹5,000 = ₹15,000 की कीमत घट गई यही ₹15,000 का ह्रास (*Depreciation*) हुआ।

APPRECIATION- मूल्य वृद्धि

जब किसी संपत्ति (*Asset*) की कीमत समय के साथ बढ़ती जाती है, तो इस कीमत बढ़ने को *Appreciation* (वृद्धि) कहा जाता है। *When the value of an asset increases over time, this increase in value is called Appreciation*

ऐसा क्यों होता है?

⇒ ज़मीन या प्रॉपर्टी की डिमांड बढ़ जाए

⇒ जगह का विकास हो जाए (जैसे रोड, स्कूल, बाज़ार बन जाए)

⇒ चीज़ दुर्लभ हो जाए (जैसे कोई पुराना सिक्का या वस्तु)

⇒ सरकारी योजना लागू हो जाए (जैसे रेलवे स्टेशन या फैक्ट्री खुल जाए)

उदाहरण से समझें

DHIRAJ SIR-AMBA

रामू ने 2015 में गांव के बाहर 1 बीघा ज़मीन ₹1 लाख में खरीदी। 2025 में उसी ज़मीन के पास नेशनल हाइवे बन गया, फैक्ट्री खुल गई। अब उसी ज़मीन की कीमत ₹5 लाख हो गई। तो ₹4 लाख की जो कीमत बढ़ी, वही *Appreciation* कहलाती है

CAPITAL- पूँजी

Amount invested by the owner in the firm is known as capital. It may be broughsst in the form of cash or assets by the owner. उस धनराशि या माल को पूँजी कहा जाता है जिसे व्यावसाय का स्वामी व्यवसाय में लगाता है। इसी राशि से व्यवसाय प्रारम्भ किया जाता है।

अपने शब्दों में :- व्यापार में व्यापार के मालिक के द्वारा व्यापार में जो पैसा या समान(माल) लगाया जाता है उसे व्यापार के भाषा में पूंजी कहा जाता है

उदाहरण

श्यामलाल गाँव में रहते हैं। उन्होंने अपने घर के सामने एक चाय की दुकान खोलने का सोचा। उन्होंने अपनी भैंस बेचकर ₹10,000 कमाए उसी ₹10,000 से उन्होंने चाय पत्ती, दूध, बर्तन और टपरी बनवाने में खर्च किये यह ₹10,000 जो श्यामलाल ने दुकान शुरू करने के लिए लगाया, वही कहलाता है पूंजी (*Capital*)।

CLASSIFICATION OF CAPITAL

पूँजी को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है

Fixed capital	*Working capital*

FIXED CAPITAL:- स्थिर पूँजी

Fixed Capital मतलब वो पैसा जो बिज़नेस की लंबे समय तक चलने वाली चीज़ों को खरीदने में लगाया जाता है। ये चीज़ें रोज़ रोज़ इस्तेमाल होती हैं, लेकिन बार–बार नहीं खरीदी जातीं *"Fixed Capital refers to the money invested in long-term assets of a business. These assets are used regularly but are not purchased frequently."*

अपने शब्दों में :-

Fixed Capital का मतलब होता है व्यापार या बिज़नेस में लंबे समय के लिए लगाए गए पैसे या संसाधन। ये वो पूंजी होती है जिससे स्थायी संपत्तियाँ (*Fixed Assets*) खरीदी जाती हैं, *"Fixed Capital refers to the money or resources invested in a business for a long period. It is the capital used to purchase fixed assets."*

उदाहरण

मान लीजिए आपने एक चाय की दुकान खोली। दुकान चलाने के लिए आपको क्या–क्या चाहिए?

दुकान (*building*),एक गैस चूल्हा, कुछ मेज़ और कुर्सियाँ, एक फ्रिज,बर्तन

ये सब चीज़ें आप बार–बार नहीं खरीदते। आप एक बार में खरीदते हैं और कई सालों तक इस्तेमाल करते हैं।

➡ इन्हें खरीदने के लिए जो पैसा लगाया गया, वही कहलाता है *Fixed Capital-*

WORKING CAPITAL- कार्यशील पूँजी

Working Capital वह पूंजी होती है जो व्यापार को रोज़ाना चलाने के लिए जरूरी होती है। इसका उपयोग कच्चा माल खरीदने, कर्मचारियों की सैलरी देने, बिजली–पानी के बिल चुकाने, और छोटे–मोटे दैनिक खर्चों को पूरा करने में किया जाता यह व्यापार को सुचारू रूप से चलाने में मदद करती है। *"Working Capital is the capital required for the day-to-day operations of a business. It is used to purchase raw materials, pay employees' salaries, settle electricity and water bills, and cover other small daily expenses. It helps in running the business smoothly."*

उदाहरण

मान लीजिए रामू किसान है। उसके पास एक ट्रैक्टर, हल, और खेत पहले से हैं ये सब चीज़ें उसकी *Fixed Capital* हैं, क्योंकि ये बार–बार नहीं खरीदी जातीं।

अब जब रामू खेती शुरू करता है, तो उसे हर सीजन में ये चीजें खरीदनी पड़ती हैं

बीज,खाद, कीटनाशक,मजदूरों की दिहाड़ी,पानी का खर्च

इन सब खर्चों में जो पैसा हर बार लगता है, उसी को कहते हैं *Working Capital*

DHIRAJ SIR-AMBA

BAD DEBTS-अप्राप्य या अशोध्य ऋण

जब हम किसी को उधार में सामान या सेवा देते हैं, तो हमें उम्मीद होती है कि वह पैसा कुछ समय बाद वापस मिलेगा।लेकिन अगर वो आदमी कभी पैसा नहीं लौटाता, और हमें यकीन हो जाता है कि अब वो पैसा वापस नहीं आएगा, तो उस डूबे हुए पैसे को कहा जाता है *Bad Debts.*

"When we sell goods or services to someone on credit, we expect that the money will be received later. But if the person never returns the money, and we are sure that it will not come back, then that lost money is called — Bad Debts."

उदाहरण

रामू एक कपड़े की दुकान चलाता है। उसने अपने जान–पहचान वाले श्याम को ₹5,000 के कपड़े उधार पर दे दिए, यह सोचकर कि श्याम कुछ दिनों में पैसे लौटा देगा। लेकिन कई महीने बीत जाने के बाद भी श्याम ने पैसे नहीं लौटाए, और अब वह गांव छोड़कर कहीं चला गया। रामू को अब यह भरोसा नहीं रहा कि उसे कभी यह पैसा वापस मिलेगा। इसलिए अब यह ₹5,000 की रकम *Bad Debt* कहलाएगी,

DOUBTFUL DEBTS- संदिग्ध ऋण

जब कोई ग्राहक उधार का पैसा काफी समय से नहीं लौटा रहा होता है, और व्यापारी को यह शक होता है कि पैसा शायद मिलेगा, शायद नहीं, तो ऐसे उधार को क्वनइजनिस क्मइजे यानी संदिग्ध कर्ज कहा जाता है। इसमें न पूरा भरोसा होता है कि पैसा वापस आएगा, और न ही पूरा यकीन होता है कि पैसा डूब गया है कृ बस शंका होती है कि क्या होगा, कुछ कह नहीं सकते। *"When a customer has not returned the credit amount for a long time, and the trader doubts whether the money will be recovered or not, such credit is called Doubtful Debts. In this case, there is no full confidence that the money will be received, and no full belief that it is completely lost — there is just uncertainty about what will happen."*

RECOVERY OF BAD DEBTS:- अप्राप्य ऋण की वसूली

जब कोई देनदार (उधारी लेने वाला व्यक्ति) पहले अपना उधार का पैसा नहीं चुका पाता, तो उस राशि को अप्राप्य ऋण (*Bad Debt*) के रूप में खत्म कर दिया जाता है, यानी उसे व्यापार में घाटा मान लिया जाता है। लेकिन कभी–कभी, कुछ समय बाद या अगले साल वह देनदार अचानक पैसे लौटा देता है। इस स्थिति में, जो पहले डूबा हुआ पैसा अब मिल जाता है, उसे अप्राप्य ऋण की वसूली कहा जाता है। इसका मतलब है कि जो पैसे पहले डूबे हुए थे, वे अब वापस मिल गए और व्यापार को उस पैसे से फायदा हुआ। *"When a debtor (the person who owes money) is unable to repay the debt earlier, the amount is written off as Bad Debt, meaning it is considered a loss for the business. However, sometimes after some time or the following year, the debtor suddenly repays the money. In this situation, the amount that was previously written off and is now recovered is called Recovery of Bad Debts. This means that the money that was once lost is now received, and the business benefits from that amount."*

उदाहरण

मान लीजिए, रामू एक किराना दुकानदार है और उसने श्यामू को ₹1,000 का सामान उधार दिया था। श्यामू ने कहा था कि कुछ दिनों में पैसे लौटा देगा, लेकिन वह कई महीनों तक पैसा नहीं लौटा पाया। रामू ने सोचा कि अब यह पैसा कभी नहीं मिलेगा और उसने इसे अप्राप्य ऋण (*Bad Debt*) मान लिया।

लेकिन कुछ समय बाद, श्यामू अचानक वापस आया और ₹1,000 रामू को दे दिए। अब रामू का जो पहले नुकसान हुआ था, वह पैसे की वसूली हो गई, और यह अप्राप्य ऋण की वसूली कहलाएगा। इसका मतलब है कि जो पैसा पहले डूब गया था, अब वह वापस मिल गया

INSOLVENT- दिवालिया

Insolvent का मतलब होता है जब कोई व्यक्ति या कंपनी इतना गरीब हो जाता है कि वह अपने ऊपर चढ़े हुए कर्ज को चुकाने में असमर्थ होता है। यानी उसके पास न तो पर्याप्त पैसा होता है और न ही कोई ऐसी संपत्ति, जिसे बेचकर वह अपना उधार चुका सके। ऐसी स्थिति में कहा जाता है कि वह व्यक्ति या कंपनी दिवालिया (*Insolvent*) हो गया है।

***Insolvent** means when a person or a company becomes so financially weak that they are unable to repay their outstanding debts. This means they neither have enough money nor any assets*

DHIRAJ SIR-AMBA

that can be sold to pay off the loan. In such a situation, the person or company is said to be insolvent ***or*** *bankrupt.*

उदाहरण

हरिया ने गाँव में एक किराने की दुकान खोली। दुकान के लिए उसने उधार पर माल मंगवाया जैसे आटा, दाल, तेल वगैरह — और पास के व्यापारी से ₹1 लाख का सामान उधारी में ले लिया। कुछ समय तक दुकान ठीक चली, लेकिन बाद में ग्राहक उधारी लेकर पैसा नहीं लौटाए, और हरिया की बिक्री भी कम हो गई।

अब हालत ये हो गई कि हरिया के पास न दुकान चलाने के लिए पैसा है, न ही वो पुराना उधार चुका सकता है, और न ही उसके पास कोई ज़मीन–जायदाद बची है बेचने को।

गाँव वाले कहते हैं

हरिया की तो अब दुकान बैठ गई है, वो अब दिवालिया हो गया है। इसका मतलब हरिया अब *Insolvent* हो गया है क्योंकि उसके पास कर्ज चुकाने की कोई आर्थिक क्षमता नहीं बची।

-:OBJECETIVE TEST:-

	प्रश्न	विकल्प *A*	विकल्प *B*	विकल्प *C*	विकल्प *D*
1	साल के अंत तक जो माल (सामान) अभी तक नहीं बिका है, वह क्या कहलाता है?	नकद क्रय	क्रय वापसी	उधार क्रय	क्लोजिंग स्टॉक
2	जो सामान पिछले साल बेचने के बाद भी गोदाम में बचा रह गया, और नया साल शुरू होते समय वह सामान स्टोर में मौजूद हो, वही माल क्या कहलाता है?	नकद क्रय	क्रय वापसी	उधार क्रय	क्लोजिंग स्टॉक
3	व्यापारी जब सामान तो अभी ले लेता है, लेकिन उसका पैसा बाद में देता है, तो इसे क्या कहा जाता है?	नकद क्रय	क्रय वापसी	उधार क्रय	क्लोजिंग स्टॉक
4	जब व्यापारी किसी सामान को बेचने के लिए खरीदता है, और बाद में वह सामान खराब, टूटा–फूटा हो, तो उसे क्या कहा जाता है?	नकद क्रय	क्रय वापसी	उधार क्रय	क्लोजिंग स्टॉक
5	जो वस्तुएं व्यापार में बेचने के लिए खरीदी जाती हैं, वे क्या कहलाती हैं?	संपत्ति	पूंजी	माल	दायित्व
6	जब कोई व्यापारी माल को ग्राहक को बेचता है और बदले में राशि प्राप्त करता है, तो इसे क्या कहा जाता है?	क्रय	विक्रय	खर्च	आय
7	ग्राहक को माल पसंद न आने या टूट–फूट के कारण जब वह माल वापस करता है, तो इसे क्या कहा जाता है?	बिक्री वापसी	क्रय वापसी	उधारी	ह्रास
8	व्यवसाय के संचालन के लिए आवश्यक चीजें जैसे मशीनरी, फर्नीचर, नगद आदि क्या कहलाती हैं?	माल	दायित्व	पूंजी	संपत्ति
9	वे संपत्तियाँ जो व्यापार में लंबे समय (12 महीने से अधिक) उपयोग होती हैं, क्या कहलाती हैं?	चालू संपत्ति	नकद	स्थायी संपत्ति	पूंजी
10	जिन संपत्तियों को छूकर महसूस किया जा सकता है, उन्हें क्या कहा जाता है?	अमूर्त संपत्ति	मूर्त संपत्ति	पूंजी	दायित्व
11	जो चीजें छूने में न आएँ लेकिन बिज़नेस के लिए कीमती हों, वे क्या कहलाती हैं?	पूंजी	दायित्व	अमूर्त संपत्ति	मूर्त संपत्ति
12	वह पैसा जो व्यवसाय ने लंबे समय के लिए कहीं निवेश किया हो, वह क्या कहलाता है?	पूंजीगत व्यय	दीर्घकालिक निवेश	स्थायी संपत्ति	पूंजी
13	जो संपत्तियाँ 1 साल में नकद में बदल जाती हैं या इस्तेमाल हो जाती हैं, उन्हें क्या कहा जाता है?	स्थायी संपत्ति	पूंजी	चालू संपत्ति	ह्रास
14	व्यापार की वह ज़िम्मेदारी जिसमें किसी को पैसा चुकाना हो, उसे क्या कहते हैं?	पूंजी	दायित्व	संपत्ति	निवेश
15	जो कर्ज़ कंपनी को 1 साल बाद चुकाना हो, वह क्या कहलाता है?	चालू दायित्व	दीर्घकालिक दायित्व	पूंजी	चालू संपत्ति

DHIRAJ SIR-AMBA

16	जो देनदारियाँ 1 साल के अंदर चुकानी हों, उन्हें क्या कहते हैं?	पूंजी	निवेश	अल्पकालिक दायित्व	ह्रास
17	ऐसे दायित्व जिनका भुगतान किसी विशेष घटना पर निर्भर करता है, वे क्या कहलाते हैं?	संभावित दायित्व	चालू दायित्व	पूंजी	हानि
18	जिन्होंने हमसे उधार में सामान खरीदा हो और भुगतान न किया हो, वे क्या कहलाते हैं?	देनदार	लेनदार	पूंजीदाता	खरीदार
19	जिनसे हमने उधार पर माल खरीदा हो और भुगतान बाकी हो, वे क्या कहलाते हैं?	ग्राहक	विक्रेता	लेनदार	देनदार
20	माल, क्रय–विक्रय या धन के लेन–देन का प्रमाण देने वाले प्रपत्र क्या कहलाते हैं?	दस्तावेज़	प्रमाणक	बिल	ह्रास
21	जब व्यवसाय का स्वामी अपने लिए नकद या माल निकालता है, तो इसे क्या कहते हैं?	पूंजी	ह्रास	निकासी	निवेश
22	जब किसी संपत्ति की कीमत समय के साथ घटती है, तो उसे क्या कहते हैं?	ह्रास	पूंजी	वृद्धि	लाभ
23	जब संपत्ति की कीमत समय के साथ बढ़ती है, तो उसे क्या कहते हैं?	ह्रास	पूंजी	वृद्धि	हानि
24	व्यवसाय शुरू करने हेतु लगाई गई राशि क्या कहलाती है?	ह्रास	पूंजी	दायित्व	संपत्ति
25	वह पैसा जो लंबी अवधि की चीज़ें खरीदने में लगाया जाता है, क्या कहलाता है?	चालू व्यय	पूंजीगत व्यय	नकद व्यय	हानि
26	व्यापार को रोज़ चलाने के लिए उपयोग की पूंजी क्या कहलाती है?	नकद पूंजी	कार्यशील पूंजी	स्थायी पूंजी	निवेश पूंजी
27	जो पैसा अब नहीं मिलने वाला हो, उसे क्या कहा जाता है?	हानि	अप्राप्य ऋण	पूंजी	रिवर्स कैश
28	जब पैसा मिल भी सकता है और नहीं भी, तो उस उधार को क्या कहते हैं?	पूंजी	संदेहास्पद ऋण	अप्राप्य ऋण	आय
29	जो पहले डूब गया था लेकिन बाद में मिल गया, उसे क्या कहते हैं?	संदेहास्पद ऋण	अप्राप्य ऋण की वसूली	पूंजी	आय
30	जब कोई व्यक्ति अपने कर्ज़ को चुकाने में असमर्थ हो जाता है, तो उसे क्या कहते हैं?	दिवालिया	हानि	लेनदार	देनदार

No-	*Question*	*Option A*	*Option B*	*Option C*	*Option D*
1	*What is the name of the goods that are unsold at the end of the year.*	*Cash Purchase*	*Purchase Return*	*Credit Purchase*	*Closing Stock*
2	*The goods left in the warehouse from last year and still available at the beginning of the new year are called.*	*Cash Purchase*	*Purchase Return*	*Credit Purchase*	*opening Stock*
3	*When a trader takes the goods now but pays later, what is it called.*	*Cash Purchase*	*Purchase Return*	*Credit Purchase*	*Closing Stock*
4	*When the goods purchased for sale are later found damaged or broken] what is it called.*	*Cash Purchase*	*Purchase Return*	*Credit Purchase*	*Closing Stock*
5	*Goods purchased for selling in the business are called.*	*Assets*	*Capital*	*Goods*	*Liability*
6	*When a trader sells goods to a*	*Purchase*	*Sale*	*Expense*	*Income*

DHIRAJ SIR-AMBA

	customer and receives money in return] what is it called.				
7	*When a customer returns the goods due to dislike or damage, what is it called.*	*Sales Return*	*Purchase Return*	*Credit*	*Depreciation*
8	*Things like machinery,furniture,and cash used for running the business are called.*	*Goods*	*Liability*	*Capital*	*Assets*
9	*Assets that are used in the business for a long period (more than 12 months) are called.*	*Current Assets*	*Cash*	*Fixed Assets*	*Capital*
10	*Assets that can be touched and felt are called.*	*Intangible Assets*	*Tangible Assets*	*Capital*	*Liability*
11	*Things that can't be touched but are valuable for the business are called.*	*Capital*	*Liability*	*Intangible Assets*	*Tangible Assets*
12	*The money invested by the business for a long term is called*	*Capital EÛpenditure*	*Long&Term Investment*	*Fixed Assets*	*Capital*
13	*Assets that are either converted into cash or used up within a year are called*	*FiÛed Assets*	*Capital*	*Current Assets*	*Depreciation*
14	*A business obligation to pay someone is called*	*Capital*	*Liability*	*Asset*	*Investment*
15	*Debt that a company has to repay after 1 year is called*	*Current Liability*	*Long&Term Liability*	*Capital*	*Current Asset*
16	*Liabilities that must be paid within 1 year are called*	*Capital*	*Investment*	*Short&Term Liabilities*	*Depreciation*
17	*Liabilities dependent on a specific event are called*	*Contingent Liabilities*	*Current Liabilities*	*Capital*	*Loss*
18	*Those who have bought goods from us on credit and have not paid yet are called*	*Debtors*	*Creditors*	*Financers*	*Buyers*
19	*Those from whom we have bought goods on credit and payment is due are called*	*Customer*	*Seller*	*Creditors*	*Debtors*
20	*The documents that serves as proof of transactions of goods purchased or cash are called*	*Documents*	*Evidence*	*Bill*	*Depreciation*
21	*When the business owner withdraws cash or goods for personal use] what is it called*	*Capital*	*Depreciation*	*Drawings*	*Investment*
22	*When the value of an asset decreases over time] what is it called*	*Depreciation*	*Capital*	*Appreciation*	*Profit*
23	*When the value of an asset increases over time] what is it called*	*Depreciation*	*Capital*	*Appreciation*	*Loss*
24	*The amount invested to start a business is called*	*Depreciation*	*Capital*	*Liability*	*Asset*
25	*Money spent on purchasing long&term items is called*	*Revenue Expenditure*	*Capital Expenditure*	*Cash Expense*	*Loss*
26	*The capital used for running daily business operations is called*	*Cash Capital*	*Working Capital*	*FiÛed Capital*	*Investment Capital*
27	*The money that is no longer receivable is called*	*Loss*	*Bad Debt*	*Capital*	*Reverse Cash*

DHIRAJ SIR-AMBA

28	*When the money may or may not be received] that debt is called*	*Capital*	*Doubtful Debt*	*Bad Debt*	*Income*
29	*The amount that was earlier written off as bad debt but is later recovered is called*	*Doubtful Debt*	*Recovery of Bad Debt*	*Capital*	*Income*
30	*When a person becomes unable to repay their debt] what are they called*	*Bankrupt*	*Loss*	*Creditor*	

SOLVENT- शोधक्षम्य

Solvent वह व्यक्ति, कंपनी या व्यापार होता है जो अपने सभी कर्ज़ (*debt*) और दायित्व (*liabilities*) को समय पर चुकाने की पूरी क्षमता रखता है। *A **Solvent** person, company, or business is one that has the full ability to pay all its **debts** and **liabilities** on time.*

आसान शब्दों में

जिसके पास इतनी संपत्ति या पैसे हों कि वह अपना सारा उधार चुका सके, उसे *Solvent* (सॉल्वेंट) कहते हैं।

*If someone has enough assets or money to repay all their loans, they are called **Solvent**.*

उदाहरण

अगर एक कंपनी के पास बैंक लोन चुकाने, कर्मचारियों को वेतन देने और सभी खर्चों को पूरा करने के लिए पर्याप्त पैसा और संपत्ति है, तो वह कंपनी *Solvent* कहलाएगी। यानी, उसे दिवालिया (*Insolvent*) होने का कोई खतरा नहीं होता।

DISCOUNT, छूट। कटौती

Discount (डिस्काउंट) का मतलब है किसी सामान या सेवा के असली मूल्य में की गई कटौती। जब दुकानदार किसी वस्तु या सेवा का मूल्य कम करके ग्राहक को देता है, तो उस छूट को डिस्काउंट कहते हैं। यह बिक्री बढ़ाने, ग्राहक को आकर्षित करने या समय पर भुगतान करवाने के लिए दिया जाता है। *Discount means a reduction made in the original price of a product or service. When a shopkeeper lowers the price of an item or service and offers it to the customer, that reduction is called a discount. It is given to boost sales, attract customers, or encourage timely payments.*

TRADE DISCOUNT- व्यापारीक कटौती

Trade Discount (ट्रेड डिस्काउंट) वह छूट है जो विक्रेता अपने व्यापारिक ग्राहकों को देता है। यह छूट सामान की खरीदारी पर दी जाती है और आमतौर पर बिल में दिखती नहीं है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यापारियों के बीच अच्छे रिश्ते बनाना और थोक में खरीदारी को प्रोत्साहित करना होता है।

Trade Discount is the discount that a seller offers to their business customers. This discount is given on the purchase of goods and is usually not shown on the bill. Its main purpose is to build good relationships between traders and encourage bulk purchasing.

मान लो हमने किसी क्रेता को 20 मोबाइल 10000 रू प्रति मोबाइल की दर से बेचे। जिस पर हमने क्रेता को 5 % व्यापारिक छूट (*Trade Discount*) दिया। तो

20 मोबाइल @ 10000 रू प्रति — 2,00,000 रू

घटा — व्यापारिक छूट @ 5% —10,000 रू

Total Invoice Amount रू— 1,90000 रु

अब यहाँ पर क्रेता और विक्रेता दोनों ही अपनी पुस्तकों में 1,90000 रु का लेखा करेंगे। ना की 2,00,000 का।

CASH DISCOUNT- नकद कटौती

यह वह छूट है जो दुकानदार ग्राहक को तब देता है, जब वह ग्राहक जल्द भुगतान करता है। दुकानदार का मकसद यह होता है कि ग्राहक जल्दी पैसे दे, ताकि उसे पैसे जल्दी मिल जाएं। इसे प्रोत्साहन देने के लिए, दुकानदार कुछ प्रतिशत की छूट दे देता है।*This is the discount that a retailer gives to a customer when they make an early payment. The retailer's goal is to encourage the customer to pay quickly so that the retailer receives the money sooner. To motivate this, the retailer offers a certain percentage of discount.*

DHIRAJ SIR-AMBA

माना हमने किसी क्रेता को 5 मोबाइल 10000 रु प्रति मोबाइल की दर से बेचे। तथा क्रेता को यह ऑफर दिया की यदि वह 20 दिन के अंदर रुपयों का भुगतान कर देता है। तो उसे *1%* नगद बट्टा (*Cash Discount*) दिया जायगा। और यदि वह 20 दिन के अंदर रुपयों का भुगतान करता है। तो

5 मोबाइल @10000 प्रति – 50,000 रू

घटाया – नगद बट्टा *@1%* –500 रू

Total Invoice Amount :- 49,500 रु

SPECIAL DISCOUNT- विशेष कटौती

Special Discount (स्पेशल डिस्काउंट) वह विशेष छूट होती है, जो किसी खास अवसर या स्थिति में दी जाती है। यह डिस्काउंट ग्राहकों को आकर्षित करने, बिक्री बढ़ाने, या किसी विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए दिया जाता है। इसे आमतौर पर विभिन्न प्रोमोशन, त्योहारी सीजन, या लिमिटेड टाइम ऑफर के रूप में पेश किया जाता है। *Special Discount is a specific discount that is given on a special occasion or circumstance. This discount is offered to attract customers, increase sales, or achieve a particular goal. It is usually presented in the form of various promotions, festive seasons, or limited-time offers.*

स्पेशल डिस्काउंट का उद्देश्य

⇒ ग्राहक को विशेष ऑफर के द्वारा आकर्षित करना।

⇒ बिक्री बढ़ाने के लिए समयबद्ध ऑफर्स देना।

⇒ विशेष अवसरों जैसे त्योहारी सीजन, सालगिरह, या कंपनी के एनिवर्सरी पर ग्राहकों को लुभाना।

उदाहरण

⇒ त्योहारों के मौके पर :- मान लीजिए दिवाली के दौरान एक स्टोर 25% का स्पेशल डिस्काउंट दे रहा है। यह डिस्काउंट सिर्फ दिवाली के दौरान है और इसके बाद खत्म हो जाएगा।

उदाहरण :- अगर किसी वस्तु की कीमत ₹2000 है, तो 25% डिस्काउंट का मतलब ₹500 की छूट होगी। तो ग्राहक को ₹1500 में सामान मिलेगा।

⇒ सीजनल डिस्काउंट :- जैसे गर्मी के मौसम में एक कंडीशनर पर 20% स्पेशल डिस्काउंट दिया जा सकता है ताकि ग्राहक गर्मी के मौसम में जल्दी खरीदें।

⇒ लिमिटेड टाइम ऑफर :- कोई दुकान यह कह सकती है, अगर आप इस हफ्ते के अंत तक खरीदारी करते हैं, तो आपको 10% का स्पेशल डिस्काउंट मिलेगा।

GOODS –IN-TRANSIT मार्गस्थ माल

Goods-in-Transit वे सामान होते हैं जो बेचने वाले ने भेज दिए हैं, लेकिन खरीदने वाले तक अभी पहुँचे नहीं हैं और रास्ते में हैं। ऐसे सामान पर कानूनी हक खरीददार का होता है, इसलिए अकाउंटिंग में इसे उसकी संपत्ति (*Asset*) के रूप में माना जाता है। *"Goods-in-Transit are items that have been dispatched by the seller but have not yet reached the buyer and are still on the way. Ownership of such goods is transferred to the buyer, and therefore, they are considered an asset in the buyer's accounting records."*

उदाहरण

राम दिल्ली से 25 अप्रैल को 100 मोबाइल फोन खरीदे। कंपनी ने माल ट्रांसपोर्ट को सौंप दिया, लेकिन फोन 28 अप्रैल को राम के पास पहुँचने वाले हैं। 25 अप्रैल को ही माल राम का माना जाएगा, और जब तक माल पहुँचता नहीं, तब तक उसे अकाउंट में *"Goods-in-Transit"* दिखाया जाएगा।

TRANSACTION- लेन–देन

Transaction वह प्रक्रिया है जिसमें दो या दो से अधिक पक्षों के बीच माल, सेवा या पैसे का आदान–प्रदान होता है। व्यापार में जब भी कोई खरीद, बिक्री, भुगतान या उधारी होती है, उसे एक *Transaction* कहा जाता है। अकाउंटिंग में हर *Transaction* को रिकॉर्ड किया जाता है ताकि व्यापार के सही वित्तीय हालात का पता चल सके। चाहे नकद में लेन–देन हो या उधारी पर, हर प्रकार का लेन–देन एक *Transaction* कहलाता है।

"A transaction is a process in which goods, services, or money are exchanged between two or more parties. In business, any purchase, sale, payment, or credit activity is called a transaction.

DHIRAJ SIR-AMBA

In accounting, every transaction is recorded to determine the true financial position of the business. Whether the exchange is in cash or on credit, every type of dealing is considered a transaction."

EXTERNAL TRANSACTIONS - बाह्य लेन–देन

External Transactions वे लेन–देन (*Transactions*) होते हैं जो किसी व्यवसाय (*Business*) और बाहर के किसी दूसरे व्यक्ति, ग्राहक, सप्लायर, बैंक आदि के बीच होते हैं। इसमें व्यापार का लेन–देन बाहरी लोगों या संस्थाओं के साथ होता है, जैसे माल खरीदना, माल बेचना, बैंक से पैसा लेना या ग्राहक से पैसा लेना।

"External Transactions are dealings that occur between a business and external parties or entities, such as purchasing goods, selling goods, borrowing money from a bank, or receiving payment from a customer. These transactions directly impact the business's accounts and are regularly recorded.

आसान शब्दों में

जब व्यापार का लेन–देन किसी बाहर वाले (जैसे ग्राहक, सप्लायर, बैंक) के साथ होता है, तो उसे *External Transaction* कहते हैं। *When a business deals with an outside party (like a customer, supplier, or bank), it is called an External Transaction."*

उदाहरण

External Transactions वे लेन–देन होते हैं जो व्यापार और बाहरी व्यक्तियों या संस्थाओं के बीच होते हैं, जैसे सप्लायर से माल खरीदना, ग्राहक को माल बेचना, बैंक से लोन लेना या ग्राहक से पेमेंट लेना। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यापारी सप्लायर से माल खरीदता है, ग्राहक को माल बेचता है, बैंक से लोन लेता है या ग्राहक से पेमेंट प्राप्त करता है, तो ये सभी *External Transactions* कहलाते हैं। इन लेन–देन का सीधा प्रभाव व्यापार के खातों पर पड़ता है और इन्हें नियमित रूप से रिकॉर्ड किया जाता है।

INTERNAL TRANSACTIONS- आन्तरिक लेन–देन

Internal Transaction वह लेन–देन होते हैं जो व्यापार के अंदर होते हैं, यानी जब कोई व्यापार अपने भीतर ही कोई बदलाव करता है, बिना बाहरी व्यक्ति या संस्था के शामिल हुए। इसमें केवल व्यापार के भीतर की गतिविधियाँ होती हैं,

Internal Transactions are transactions that occur within a business, meaning when a business makes changes internally without the involvement of external parties or institutions. These transactions involve only activities within the business.

उदाहरण

⇒ स्टॉक ट्रांसफर :- जब एक कंपनी अपने एक गोदाम से दूसरे गोदाम में स्टॉक ट्रांसफर करती है, तो यह एक *Internal Transaction* है। उदाहरण के लिए, अगर रामू काका ने अपनी दुकान के पुराने बर्तन दूसरे कमरे में शिफ्ट किए, तो यह भी एक *Internal Transaction* है। यहां किसी बाहरी पार्टी से कोई लेन–देन नहीं हो रहा है, बल्कि व्यापार के अंदर ही एक सामान की जगह बदल रही है।

⇒ बैंक ट्रांसफर :- यदि एक व्यापार के एक खाता से दूसरे खाते में पैसा ट्रांसफर किया जाता है, तो यह भी एक *Internal Transaction* है। मान लीजिए, रामू काका ने अपनी दुकान के बैंक खाते से दुकान के दूसरे खाते में पैसा ट्रांसफर किया, तो यह एक *Internal Transaction* हुआ। इसमें बाहरी बैंक या कोई अन्य व्यक्ति शामिल नहीं था, केवल दुकान के अंदर ही एक ट्रांसफर हुआ।

⇒ वेतन का भुगतान (*Salary Transfer*) :- जब किसी कंपनी के कर्मचारी को उनकी सैलरी भुगतान की जाती है, तो यह एक *Internal Transaction* माना जाता है। यहां कोई बाहरी लेन–देन नहीं होता है, क्योंकि यह केवल कंपनी के भीतर हो रहा होता है।

CASH TRANSACTION- नकद लेन–देन

Cash Transaction वह लेन–देन होता है जिसमें भुगतान या प्राप्ति तुरंत नकद में होती है। इसमें किसी तरह की उधारी या बाद में भुगतान नहीं होता, बल्कि पैसे उसी समय हाथों–हाथ दिए या लिए जाते हैं। जैसे कोई ग्राहक दुकान से सामान खरीदता है और उसी समय ₹500 नकद में भुगतान कर देता है, तो यह एक *Cash Transaction* कहलाता है। इसी तरह अगर किसी कर्मचारी को सैलरी दी जाती है और तुरंत नकद में भुगतान कर दिया जाता है, तो वह भी *Cash*

DHIRAJ SIR-AMBA

Transaction है। कुल मिलाकर, जहाँ पैसे का आदान–प्रदान तुरंत नकद में हो, उसे *Cash Transaction* कहा जाता है *Cash Transaction is a transaction in which payment or receipt is made immediately in cash. There is no credit or deferred payment involved; instead, the money is exchanged instantly at the time of the transaction. For example, if a customer buys goods from a shop and immediately pays ₹500 in cash, it is called a Cash Transaction. Similarly, if an employee is given their salary and it is paid immediately in cash, that too is a Cash Transaction. In short, whenever money is exchanged instantly in cash, it is referred to as a Cash Transaction.*

CRADIT TRANSACTION- उधार लेन–देन

Credit Transaction वह लेन–देन होता है जिसमें भुगतान या प्राप्ति तुरंत नहीं होती, बल्कि बाद में तय समय पर की जाती है। इसमें ग्राहक सामान या सेवा तो उसी समय प्राप्त कर लेता है, लेकिन पैसे बाद में देता है। जैसे, रामू काका ने दुकान से किराने का सामान लिया और दुकानदार से कहा कि वह महीने के अंत में भुगतान करेगा, तो यह एक *Credit Transaction* कहलाता है। *Credit Transaction is a transaction in which payment or receipt does not happen immediately, but is made at a later agreed time. In this, the customer receives the goods or services at that moment, but pays later. For example, if Ramu Kaka takes groceries from the shop and tells the shopkeeper that he will make the payment at the end of the month, it is called a Credit Transaction.*

LIVE- STOCK- जीवित स्टॉक। पशुधन

Live Stock (लाइव स्टॉक) का मतलब होता है ऐसे पालतू जानवर जो खेती, व्यापार या उत्पादन के उद्देश्य से पाले जाते हैं। इनमें गाय, भैंस, बकरी, भेड़, घोड़ा, बैल, और मुर्गियाँ शामिल होती हैं। इन जानवरों का उपयोग दूध, मांस, अंडे, ऊन, चमड़ा, खाद (गोबर) और खेती जैसे कामों के लिए किया जाता है। व्यवसायिक दृष्टि से लाइव स्टॉक को एक संपत्ति माना जाता है क्योंकि ये किसान या व्यापारी को आय (*income*) देने में मदद करते हैं।

"Live Stock" refers to domesticated animals that are raised for agricultural, commercial, or production purposes. These include cows, buffaloes, goats, sheep, horses, bulls, and chickens. These animals are used for milk, meat, eggs, wool, leather, manure, and agricultural work. From a business perspective, livestock is considered an asset because they help farmers or traders generate income.

DEAD STOCK- मृत स्टॉक

Dead Stock (डेड स्टॉक) वह सामग्री या सामान होते हैं जो अब उपयोग में नहीं आते या जिनका कोई मूल्य नहीं रह जाता। यह वह वस्तुएं होती हैं जो लंबे समय से बेची नहीं गईं, पुरानी हो गईं, या जिन्हें अब काम में नहीं लिया जा सकता। उदाहरण के लिए, पुराना फर्नीचर, खराब इलेक्ट्रॉनिक सामान या ज्यादा स्टॉक में पड़े उत्पाद जो अब बिकने लायक नहीं होते। *Dead Stock* अक्सर व्यवसायों के लिए एक परेशानी का कारण बनता है क्योंकि इसे न तो बेचा जा सकता है और न ही इस्तेमाल किया जा सकता है, इसलिए समय–समय पर इसे साफ किया जाता है।

***Dead Stock** refers to materials or goods that are no longer in use or have lost their value. These are items that have not been sold for a long time, have become outdated, or can no longer be used. Examples include old furniture, damaged electronic items, or overstocked products that are no longer sellable. Dead stock is often a problem for businesses because it can neither be sold nor used, so it is cleared out from time to time.*

EXPENSE -व्यय

Expense (खर्च) का मतलब है वह राशि या संसाधन जो किसी कार्य, सेवा या व्यापार को चलाने के लिए नियमित रूप से खर्च किए जाते हैं। व्यापारिक भाषा में, जब कोई कंपनी या व्यक्ति अपने व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए जैसे वेतन देना, किराया चुकाना, बिजली–पानी का बिल भरना, विज्ञापन कराना, माल ढोना या कच्चा माल खरीदना आदि में पैसा खर्च करता है, तो उसे 'खर्च' कहा जाता है। खर्च व्यापार की आमदनी को घटाता है और लाभ–हानि की गणना में इसका सीधा असर पड़ता है। *Expense means the amount or resource regularly spent to run a task, service, or business. In business terms, when a company or an individual spends money to*

DHIRAJ SIR-AMBA

smoothly operate their business—such as paying salaries, rent, utility bills, advertising, transportation, or purchasing raw materials—this is called an expense. Expenses reduce the income of a business and directly affect the calculation of profit or loss.

-:TYPES OF EXPENSES:-

Direct Expense	सीधे प्रोडक्ट बनाने से जुड़े खर्च, जैसे कच्चा माल, मजदूरी।
Indirect Expense	जो प्रोडक्ट बनाने में सीधे नहीं लगते, जैसे ऑफिस का खर्च, वेतन, प्रचार।
Fixed Expense	हर महीने तय रहने वाला खर्च, जैसे किराया, सैलरी।
Variable Expense	जो उत्पादन के अनुसार बदलता है, जैसे कच्चा माल, बिजली खर्च।
Capital Expense	वो खर्च जो लंबे समय के लिए संपत्ति बनाने या खरीदने में होता है, जैसे मशीन, बिल्डिंग।
Revenue Expense	रोज़मर्रा के कामों के लिए होने वाला खर्च, जैसे वेतन, किराया, बिजली बिल।
Operating Expense	बिज़नेस चलाने के लिए जो खर्च जरूरी है, जैसे वेतन, ऑफिस खर्च, स्टेशनरी।
Non-Operating Expense	बिज़नेस के मुख्य काम से अलग खर्च, जैसे ब्याज देना, नुकसान आदि।

DIRECT EXPENSES- प्रत्यक्ष खर्चे

Direct exp means all expenses directly connected with purchases of goods and bringing them to saleable condition . प्रत्यक्ष खर्चे वे खर्चे हैं जो माल के क्रय के चरण से लेकर माल के बनाने एवं इन्हें विक्रय योग्य बनाने के चरण तक किये जाते हैं।

आसान शब्दों में

Direct Expenses वे खर्च होते हैं जो किसी प्रोडक्ट को बनाने में सीधे रूप से लगते हैं। उदाहरण के तौर पर, अगर आप एक जूते की फैक्ट्री चला रहे हैं, तो जूते बनाने के लिए जरूरी सामान जैसे चमड़ा, धागा, और गोंद, ये सभी *Direct Expenses* हैं। इसके साथ ही, जो मजदूर जूते बनाने का काम करते हैं, उनकी मजदूरी भी *Direct Expense* होगी, क्योंकि ये खर्च जूते बनाने के लिए आवश्यक हैं। यानी, जो खर्च सीधे तौर पर उत्पादन से जुड़ा हो, उसे *Direct Expense* कहते हैं। *Direct Expenses are the costs directly associated with the production of a product. For example, if you are running a shoe factory, the materials needed to make the shoes, such as leather, thread, and glue, are all Direct Expenses. Additionally, the wages of the workers who make the shoes are also considered Direct Expenses, as these costs are essential for the production process. In other words, any expense that is directly related to production is called a Direct Expense.*

INDIRECT EXPENSES- अप्रत्यक्ष व्यय

Indirect Expenses वे खर्च होते हैं जो किसी प्रोडक्ट को बनाने से सीधे नहीं जुड़े होते, लेकिन फिर भी व्यवसाय को चलाने के लिए जरूरी होते हैं। जैसे कि कर्मचारियों का वेतन जो प्रोडक्ट बनाने में मदद नहीं करते, फैक्ट्री या ऑफिस का किराया, बिजली और पानी का बिल, या मार्केटिंग और विज्ञापन पर खर्च। ये खर्च सीधे तौर पर प्रोडक्ट की लागत से जुड़े नहीं होते, लेकिन बिना इन खर्चों के व्यापार नहीं चल सकता। इसलिए, इन्हें '*Indirect Expenses* कहा जाता है
Indirect Expenses are costs that are not directly linked to the production of a product but are still necessary to run the business. Examples include the salaries of employees who do not directly work on production, rent for the factory or office, utility bills for electricity and water, or expenses on marketing and advertising. These costs are not directly related to the product's cost, but the business cannot operate without them. Therefore, they are called Indirect Expenses.

CLASSIFICATION OF DIRECT EXP

	Carriage &	*Railway Freight on Purchases*	रेल भाड़ा क्रय पर	*Freight*	भाड़ा

DHIRAJ SIR-AMBA

01	*Freight* गाड़ी भाड़ा एवं भाड़ा	*Carriage & Freight*	गाड़ी भाड़ा एवं भाड़ा	*Carriage Inward*	आन्तरिक गाड़ी भाड़ा
		Carriage on Purchase	माल क्रय पर भाड़ा	*Carriage*	गाड़ी भाड़ा
		Colie & Cartage	कुली एवं कार्टेज		
02	*Wages* म्जदूरी	*Wages*	मजदूरी	*Productive wages*	
		Factory wages		*Wages & Salary*	मजदूरी एवं वेतन
		Labour cost		*Direct Labour*	
03	*Insurance* बेमा	*Factory Insurance*	बीमा प्रीमियम	*Premium on Factory Insurance*	कारखाने का बीमा प्रीमियम
04	*Factory Expenses* कारखाने से सम्बन्धित व्यय	*Factory Rent*	कारखाने का किराया	*Factory Lighting*	फैक्टरी लाइटिंग
		Rates & Taxes	कर एवं दर	*Factory Repairs*	कारखाने की मरम्मत
		other Factory Expenses	अन्य कारखाना व्यय		
05	*Manufacturing Expenses* निर्माण सम्बन्धी व्यय	*Gas,*	गैस,	*Fuel*	ईधन,
		Light	प्रकाश	*Power*	शक्ति
		Water	जल	*Oil*	तेल,
		Grease	ग्रीस	*Coal, chemicals, Colours*	कोयला, रासायनिक पदार्थ रंग

CLASSIFICATION OF INDIRECT EXP

01	*Administration and Office Expenses*:- कार्यालय तथा प्रबन्ध सम्बन्धी व्यय अथवा प्रशासन तथा कार्यालय प्रबन्ध सम्बन्धी व्यय	*Establishment Expenses or Charges*	व्यापार संचालन व्यय
		Office Salaries	कार्यालय के कर्मचारियों के वेतन
		Office Rent and Tax	कार्यालय का किराया और कर
		Lighting	प्रकाश
		Printing and Stationery	मुद्रण तथा लेखन–सामग्री
		Postage, Telegrams and Telephone charges	डाक, तार और टेलीफोन व्यय
		Audit Fee	अंकेक्षण शुल्क
		General or Trade Expenses	सामान्य या व्यापारिक व्यय
		Salaries	वेतन
		Insurances	बीमा
		Repairs And Renewals	मरम्मत और नवीनीकरण
		Staff bonuses	स्टाफ बोनस
		General Expenses	सामान्य व्यय
		Trade Expenses	व्यापार खर्च
		Director's Fee	निदेशक शुल्क
		Administrative Expenses	प्रशासनिक व्यय
		Legal Expenses	विधि व्यय

DHIRAJ SIR-AMBA

		Electric charges	विद्युत शुल्क
		Office lighting	कार्यालय प्रकाश व्यवस्था
02	*Selling and Distribution related Expenses.* विक्रय तथा वितरण सम्बन्धी व्यय	*Salemen's Salaries and Commission*	विक्रेताओं का वेतन तथा कमीशन
		Agent's Commission or Remuneration	एजेण्टों का कमीशन या पारिश्रमिक
		Advertisement	थ्वज्ञापन
		Warehouse Rent	गोदाम का किराया
		Packing Expenses(out)	पैकिंग व्यय
		Carriage on Sales	विक्रय पर ढुलाई व्यय
		Bad Debts	अप्राप्य ऋण
		Export Duties	निर्यात कर
		Goods and Services Tax	वस्तु एवं सेवा कर
		Upkeep of Vehicles for Distribution	वितरण हेतु रखी गई गाड़ियों का व्यय
		Distribution Expenses	वितरण व्यय
		Carriage outward	बाहर की ओर ढुलाई
		Commission	कमीशन
		Travelling Expenses	यात्रा खर्च
		Conveyance Expenses	परिवहन व्यय
		Godown rent	गोदाम का किराया
		Brokerage	छलाली
		Free Samples	निशल्क नमूने
03	*Financial Expenses*	*Interest on Loan*	ऋण पर ब्याज
		Interest on Capital	पूँजी पर ब्याज
		Discount on Bills	बिल चुकाने पर बट्टा
		Discount Allowed	दत्त छुट
		Interest on bank overdraft	*बैंक ओवरड्राफ्ट पर ब्याज*
		Bank charges	*बैंक शुल्क*
04	*Abnormal Expenses/Extra-ordinary Expenses* असाधारण व्यय/अप्रचलित व्यय	*Loss by Fire*	आग से हानि
		Loss by Theft	चोरी से हानि
		Loss on Sale of Fixed Assets	अचल सम्पतियों की बिक्री से हानि
05	*Depreciation and Other Expenses* ह्रास एवं अन्य व्यय	*Trading Expenses*	व्यापारिक व्यय
		Charity	छान
		Sundry Expenses	विविध व्यय
		Depreciation	ᴓास
		Licence fee	लाइसेंस शुल्क
		Loss on sale of fixed assets	*अचल संपत्तियों की बिक्री पर नुकसान*

DHIRAJ SIR-AMBA

KEY POINTS TO REMEMBER

Carriage	*Direct exp*
Carriage inward	*Direct exp*
Carriage outward	*Indirect exp*
Wages	*Direct exp*
Salaries	*Indirect exp*
Salaries and wages	*Indirect exp*
Wages and Salaries	*Direct exp*

-:FIXED EXPENSE:-

Fixed Expenses वे खर्च होते हैं जो हर महीने एक जैसे रहते हैं, चाहे बिज़नेस चले या न चले, प्रोडक्शन हो या न हो। उदाहरण के लिए, ऑफिस या फैक्ट्री का किराया, कर्मचारियों की सैलरी, इंटरनेट का बिल, लाइसेंस फीस आदि ऐसे खर्च हैं जो हर महीने तय रहते हैं और बदलते नहीं। मान लीजिए आपकी फैक्ट्री में काम हो रहा है या बंद है, लेकिन फिर भी आपको फैक्ट्री का किराया और स्टाफ की सैलरी देनी ही पड़ेगी ये ही होते हैं *Fixed Expenses*

Fixed Expenses are those expenses that remain the same every month, whether the business is running or not, and whether there is production or not. For example, office or factory rent, employee salaries, internet bills, license fees, etc., are such expenses that remain fixed every month and do not change. Suppose your factory is operational or shut down, still you have to pay the rent of the factory and the staff salaries – these are called Fixed Expenses.

-:VARIABLE EXPENSE:-

Variable Expenses वे खर्च होते हैं जो बिज़नेस के काम या उत्पादन के बढ़ने–घटने पर बदलते रहते हैं। उदाहरण के लिए, अगर आप ज़्यादा माल बना रहे हैं तो कच्चे माल और बिजली का खर्च भी ज़्यादा होगा, और अगर कम माल बना रहे हैं तो ये खर्च भी कम होंगे। जैसे कच्चा माल, बिजली बिल, मजदूरी (पीस रेट पर), पैकिंग खर्च आदि। ये खर्च हर महीने एक जैसे नहीं रहते, इसलिए इन्हें *Variable* यानी बदलने वाले खर्च कहा जाता है।

Variable Expenses are those costs that change depending on the level of business activity or production. For example, if you are producing more goods, the cost of raw materials and electricity will also increase. And if you are producing less, these costs will decrease. Examples include raw materials, electricity bill, wages (on piece rate), packaging expenses, etc. These costs do not remain the same every month, so they are called Variable Expenses.

-:CAPITAL EXPENSE:-

Capital Expenses वे खर्च होते हैं जो किसी बिज़नेस के लिए लंबे समय तक उपयोग होने वाली चीज़ें *(assets)* खरीदने या बनाने में होते हैं। ये खर्च एक बार में ज्यादा होते हैं, लेकिन इनसे मिलने वाला फायदा कई सालों तक चलता है। उदाहरण के लिए, मशीन खरीदना, बिल्डिंग बनवाना, ज़मीन खरीदना या नया कंप्यूटर सिस्टम लगवाना। ऐसे खर्च बिज़नेस की संपत्ति बढ़ाते हैं, इसलिए इन्हें *Capital Expenses* कहा जाता है।

Capital Expenses are the costs spent on buying or creating things (assets) that are used in a business for a long time. These expenses are usually large and provide benefits for many years. For example, buying a machine, constructing a building, purchasing land, or installing a new computer system. These expenses increase the assets of the business, so they are called Capital Expenses.

-:REVENUE EXPENSE:-

Revenue Expense वे खर्च होते हैं जो रोज़मर्रा के कामकाज को चलाने के लिए किए जाते हैं। ये खर्च नियमित रूप से होते हैं और इनका असर केवल उसी समय तक रहता है, जब इन खर्चों का भुगतान किया जाता है। उदाहरण के लिए, कर्मचारियों का वेतन, ऑफिस का किराया, बिजली बिल, पानी का बिल, और अन्य रोज़मर्रा के खर्चे। ये खर्च बिज़नेस के लिए जरूरी होते हैं, लेकिन इनका कोई लंबा असर नहीं होता और ये हर महीने होते

DHIRAJ SIR-AMBA

"Revenue expenses are the expenses incurred to carry out day-to-day operations. These expenses are regular and their effect lasts only until they are paid. Examples include employee salaries, office rent, electricity bills, water bills, and other daily expenses. These expenses are necessary for the business, but they don't have a long-term impact and occur every month."

-:OPERATING EXPENSE:-

Operating Expense (संचालन खर्च) वे खर्च होते हैं जो किसी बिज़नेस को रोज़ चलाने के लिए जरूरी होते हैं। इन खर्चों का सीधा संबंध बिज़नेस की रोज़मर्रा की गतिविधियों से होता है, जैसे ऑफिस का किराया, बिजली–पानी का बिल, स्टेशनरी, कर्मचारी वेतन, फोन बिल आदि। ये खर्च उत्पाद तैयार करने में सीधे नहीं लगते, लेकिन बिज़नेस को सुचारू रूप से चलाने के लिए जरूरी होते हैं। अगर ये खर्च न किए जाएं, तो ऑफिस का कामकाज और प्रबंधन रुक सकता है, इसलिए इन्हें संचालन खर्च कहा जाता है। Operating expenses are the expenses that are necessary to run a business on a daily basis. These expenses are directly related to the day-to-day activities of the business, such as office rent, electricity and water bills, stationery, employee salaries, phone bills, etc. These costs are not directly involved in the production of goods but they are essential to keep the business running smoothly. If these expenses are not incurred, office operations and management may come to a halt. That is why they are called operating expenses.

⇒ मुख्य व्यवसाय से सम्बन्धित सभी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष व्ययों *(Direct and indirect Expenses)* को शामिल किया जाता है

-:NON-OPERATING EXPENSES:- गैर–संचालन व्यय

non –operating expenses are the expenses which do not relate to the main activity of enterprise. ऐसे व्यय जिनका दैनिक खर्चों से कोई लेना–देना नहीं है। ऐसा व्यय जो व्यवसाय से संबंधित नहीं होते हैं लेकिन व्यवसाय में कभी कभी हो जाते हैं हो जाते हैं ऐसे खर्च को गैर संचालन व्यय कहा जाता है

LIST OF NON-OPERATING EXP

Interest on loans	*Donation*	*interset on bank loan*	*loss by theft*
Loss on sale of furniture	*Loss by fire*	*charity*	*loss of damage*
loss on account of fire			

INCOME- आय

Income (आय) वह पैसा या लाभ है जो किसी व्यक्ति या व्यवसाय को उनके काम, सेवा, व्यापार या निवेश के बदले में प्राप्त होता है। जब कोई व्यापार अपने सामान या सेवाओं को बेचकर पैसे कमाता है, या किसी संपत्ति (जैसे दुकान, मकान) को किराए पर देकर, बैंक में जमा पैसे पर ब्याज से या कमीशन से कोई पैसा प्राप्त करता है, तो वह सब आय कहलाता है। आय किसी भी व्यवसाय की प्रगति और सफलता का मुख्य आधार होती है, क्योंकि यही वह स्रोत है जिससे सभी खर्च पूरे किए जाते हैं और मुनाफा कमाया जाता है। इसलिए, आय को किसी भी आर्थिक प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है *Income is the money or profit that a person or business receives in return for their work, services, trade, or investments. When a business earns money by selling goods or services, renting out property (like a shop or house), earning interest on bank deposits, or receiving commission, all of this is called income. Income is the main foundation of a business's growth and success, as it is the source through which all expenses are covered and profit is earned. Therefore, income is considered the most important part of any economic system.*

TYPES OF INCOME

Operating Income	मुख्य व्यापार चलाने से होने वाली आय, जैसे प्रोडक्ट बेचकर कमाई।
Non-Operating Income	व्यापार के अतिरिक्त स्त्रोतों से कमाई, जैसे निवेश से ब्याज या लाभांश।
Revenue Income	रोज़ के व्यापार से होने वाली आमदनी, जैसे बिक्री, सेवा, किराया आदि।
Capital Income	लंबे समय के निवेश से होने वाली आमदनी, जैसे संपत्ति बेचने से मिली रकम।

DHIRAJ SIR-AMBA

Direct Income	जो सीधे व्यापार की मुख्य गतिविधि से मिलती है, जैसे बिक्री की आमदनी।
Indirect Income	जो व्यापार के अलावा और तरीकों से मिलती है, जैसे किराया, ब्याज आदि।

OPERATING INCOME- संचालन आय

Operating Income (संचालन आय) वह आय होती है जो किसी व्यवसाय को उसकी मुख्य गतिविधियों से मिलती है, जैसे प्रोडक्ट या सेवा बेचकर। यह आय व्यवसाय की नियमित कार्यप्रणाली से जुड़ी होती है, और इसके तहत उत्पादों या सेवाओं की बिक्री से जो भी पैसा आता है, उसे संचालन आय माना जाता है। उदाहरण के लिए, अगर एक कपड़े की दुकान है, तो उस दुकान से कपड़े बेचकर जो पैसे मिलते हैं, वह *Operating Income* होगी। यह आय मुख्य रूप से व्यापार के संचालन से प्राप्त होती है, और इसका सीधा संबंध व्यवसाय की उत्पादकता से होता है।

Operating income is the income a business earns from its core activities, such as selling products or services. This income is directly related to the regular operations of the business, and it includes all the money received from the sale of goods or services. For example, if there is a clothing store, the money earned from selling clothes would be considered operating income. This income mainly comes from the business's operations and is directly related to the productivity of the business.

NON-OPERATING INCOME-गैर–संचालन आय

Non –operating incomes are incomes earned and which do not relate to the main or operating activity of the enterprise such as interest received on investment, gain (profit) on sale of fixed assets . गैर–संचालन आय वह है जो किसी अन्य स्रोत से प्राप्त होती है अर्थात् जो व्यावसाय से प्राप्त नहीं होती है। जैसे– किराया प्राप्त, अंशों पर लाभांश, विनियोगों पर ब्याज, बैंक जमा पर ब्याज, स्थायी सम्पत्तियों के विक्रय पर लाभ आदि।

LIST OF NON OPERATING INCOME

Interest on investments	*Rent received*	*Gain on sale of fixed assets*
Dividend on investments		

-:DIRECT INCOME:-

Direct Income (प्रत्यक्ष आय) वह कमाई होती है जो किसी बिज़नेस को उसके मुख्य काम से सीधे मिलती है। मतलब आपने जो काम करने के लिए दुकान या कंपनी खोली है, अगर उसी काम से पैसा आता है, तो वह *Direct Income* होती है।

Direct Income is the income that a business earns directly from its main activity.

Meaning – If you earn money from the work for which you opened the shop or company, then that income is called Direct Income.

उदाहरण से समझिए

अगर आपकी जूतों की दुकान है
तो जूते बेचकर जो पैसे मिलते हैं, वह *Direct Income* है।
अगर आप कोचिंग चलाते हैं
तो छात्रों से फीस मिलती है, वह आपकी *Direct Income* है।

-:INDIRECT INCOME:-

Indirect Income (अप्रत्यक्ष आय) वह आय होती है जो व्यापार की मुख्य गतिविधियों से नहीं, बल्कि अन्य सहायक स्रोतों से प्राप्त होती है। यह आय सीधे प्रोडक्ट बेचने या सेवा देने से नहीं मिलती, बल्कि जैसे किराया प्राप्त होना, ब्याज मिलना, कमीशन या छूट प्राप्त होना जैसे माध्यमों से होती है। उदाहरण के लिए, अगर कोई दुकान अपना एक हिस्सा किराए पर देता है और उससे जो पैसा मिलता है, वह अप्रत्यक्ष आय कहलाता है। यह व्यापार की आमदनी का हिस्सा तो होती है, लेकिन मुख्य काम से अलग होती है। *Indirect Income is the income that is not earned from the main business activities, but from other supporting sources.This income does not come directly from selling a product or providing a service, but from sources like – receiving rent, earning interest, getting commission, or discounts.*

DHIRAJ SIR-AMBA

Example:If a shop rents out a portion of its space and earns money from that rent, it is called Indirect.

-:REVENUE INCOME:-

Revenue Income (राजस्व आय) वह आय होती है जो किसी व्यवसाय को उसकी रोज़मर्रा की सामान्य गतिविधियों से प्राप्त होती है, जैसे सामान बेचना, सेवाएं देना, ब्याज, किराया या कमीशन प्राप्त करना। यह आय नियमित रूप से होती है और व्यापार की मुख्य गतिविधियों से जुड़ी होती है। उदाहरण के लिए, अगर एक मोबाइल शॉप मोबाइल बेचती है और उससे जो पैसा कमाती है, वह उसकी *Revenue Income* कहलाती है *Revenue Income is the income that a business earns from its regular day-to-day activities, such as selling goods, providing services, receiving interest, rent, or commission. This income is received regularly and is directly related to the main operations of the business. For example, if a mobile shop sells mobile phones and earns money from it, that money is considered its Revenue Income.*

-:CAPITAL INCOME:-

Capital Income (पूंजी आय) वह आय होती है जो व्यापार को उसकी मुख्य रोज़मर्रा की गतिविधियों से नहीं, बल्कि अस्थायी और विशेष सौदों से प्राप्त होती है, जैसे फिक्स्ड एसेट्स (मशीन, बिल्डिंग आदि) बेचने, शेयर या डिबेंचर जारी करने, या लोन प्राप्त करने से मिलने वाली राशि। यह आय व्यापार में नियमित रूप से नहीं होती और इसका उपयोग व्यापार की लंबी अवधि की जरूरतों को पूरा करने, जैसे नई संपत्ति खरीदना या विस्तार करना, जैसे कार्यों में किया जाता है। *Capital Income is the income that a business earns not from its regular day-to-day activities, but from occasional and special transactions, such as selling fixed assets (like machines or buildings), issuing shares or debentures, or receiving loans. This type of income is not received regularly, and it is used to fulfill the long-term needs of the business, such as purchasing new assets or business expansion.*

OUTSTANDING EXPENSES- अदत्त व्यय

Outstanding Expenses वे खर्चे होते हैं जो किसी विशेष अवधि (जैसे महीने या साल) के दौरान हो तो चुके हैं, लेकिन अभी तक चुकाए नहीं गए हैं। उदाहरण के लिए, अगर किसी कंपनी ने अपने कर्मचारियों की मार्च महीने की सैलरी अब तक नहीं दी है, तो वह सैलरी "*Outstanding Excpense*" कहलाएगी। इसी तरह किराया, बिजली का बिल, या अन्य जरूरी खर्च जो उस अवधि में बन चुके हैं लेकिन भुगतान बाकी है, ये सभी आउटस्टैंडिंग खर्च माने जाते हैं।

Outstanding Expenses are those expenses which have been incurred during a specific period (such as a month or a year), but have not yet been paid. For example, if a company has not yet paid the salary for the month of March to its employees, then that salary will be called an Outstanding Expense.

PREPAID EXPENSES/ UNEXPIRED EXPENSES/ PAID IN ADVANCE
पूर्वदत्त व्यय या असमाप्त व्यय या अग्रिम व्यय

जब हम किसी *goods* या *services* को लेने से पहले ही उसके पैसे पहले से *payment* कर देते हैं या *advance* में दे देते हैं या ऐसे *Expense* जो *next year* के होते हैं पर उनका *payment* हम *current year* में कर देते हैं, इसे हम *Prepaid Expense* कहते हैं। जैसे कोई *rent* हमें 12 महीने का *pay* करना था और हमने 13 महीने का *pay* कर दिया तो 12 महीने का तो इस *current accounting period* का हो जाएगा और अगले 1 महीने का *rent* हमारा अगले *accounting period* में आएगा *Prepaid Expenses* ***or*** *Unexpired Expenses or Paid in Advance are those expenses which are paid before receiving the goods or services, that is, paid in advance. These are expenses that actually belong to the next year but are paid in the current year. For example, if rent was to be paid for 12 months and rent for 13 months is paid, then 12 months' rent will belong to the current accounting period and 1 month's rent will be treated as* ***Prepaid Expense****, which will be shown in the next accounting period.*

ACCRUED INCOME- उपार्जित आय /अदत आय

DHIRAJ SIR-AMBA

Accrued Income यानी जमा आय वह आय होती है जो हमने कमा ली है लेकिन अभी तक उसका पैसा हमें मिला नहीं है। मतलब काम पूरा हो चुका है, सेवा दे दी गई है या ब्याज/किराया आदि मिलने का हक बन गया है, लेकिन पैसा बाद में मिलेगा। उदाहरण के लिए, अगर आपने किसी को पैसा उधार दिया और साल के अंत तक ब्याज बन गया लेकिन सामने वाले ने अभी तक वो ब्याज नहीं दिया, तो वह ब्याज *Accrued Income* कहलाएगा। *Accrued Income" refers to the income that has been earned but not yet received. In other words, the work has been completed, a service has been provided, or the right to receive interest/rent, etc., has been established, but the payment will be received later.For example, if you lend money to someone and interest has accumulated by the end of the year, but the borrower has not paid that interest yet, then that interest is called Accrued Income.*

INTEREST ON CAPITAL- पूँजी पर ब्याज

व्यापारी द्वारा व्यापार में जो पूँजी लगाया जाता है, उस पर एक निश्चित दर से जो ब्याज व्यापार के द्वारा दिया जाता है। उसे ही पूँजी पर ब्याज कहा जाता है। जैसे राम एक व्यापारी है उसने पूंजी के रूप में 1 लाख व्यापार में लगाया तथा 6 % के दर से ब्याज व्यापार से मांगता है तो यहां पर 1 लाख का 6 परसेंट 6000 होगा जिसे व्यापारी को व्यापार के द्वारा दिया जाएगा इसलिए यहां पर 6000 *interest on capital* कहलायेगा।

The interest paid on the capital invested by a business owner in the business, at a fixed rate, is called Interest on Capital.

For example, Ram is a businessman who has invested ₹1,00,000 in the business and demands interest at a rate of 6%. In this case, the interest on ₹1,00,000 @ 6% will be ₹6,000, which will be paid to the businessman by the business. Therefore, this ₹6,000 is referred to as Interest on Capital.

INTEREST ON DRAWINGS-आहरण पर ब्याज

जब व्यवसाय का स्वामी अपने निजी प्रयोग के लिए व्यवसाय से नकद राशि निकालता है तो उसे आहरण कहा जाता है। यदि आहरण पर कोई ब्याज व्यापारी के द्वारा व्यापार को दिया जाता है। उसे ही आहरण पर ब्याज कहा जाता है।

When the owner of a business withdraws cash from the business for personal use, it is called Drawings. If the business pays any interest on the drawings made by the owner, it is referred to as Interest on Drawings.

उदाहरण :-मान लीजिए, श्री राज एक व्यापारी हैं और उन्होंने अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए व्यापार से ₹20,000 निकाले। व्यापार इस आहरण पर 8 % वार्षिक ब्याज चार्ज करता है। तो, ₹20,000 पर एक साल के लिए ब्याज होगा

आहरण पर ब्याज = ₹20,000 × 8% = ₹1,600

इसलिए, व्यापार श्री राज से ₹1,600 का आहरण पर ब्याज चार्ज करेगा, जो उन्होंने व्यक्तिगत उपयोग के लिए निकाले थे।

-:BUSINESS :-

व्यवसाय मतलब कोई भी काम जो पैसा कमाने के लिए किया जाए और जो कानून के अनुसार सही (*legal*) हो। यह काम कोई सामान बेचकर या कोई सेवा देकर किया जा सकता है।

जैसे दुकान चलाना, सामान बनाना, या ऑनलाइन चीज़ें बेचना।

Business *means any activity that is done to earn money and is legally correct (as per the law). This activity can be done either by selling goods or by providing services.*

For example: running a shop, manufacturing products, or selling things online.

जरूरी बात

- पैसा कमाने के लिए हो
- बार–बार किया जाए (एक बार का काम नहीं)
- गैरकानूनी नहीं होना चाहिए

उदाहरण :-राम दुकान चलाता है और रोज़ सामान बेचकर पैसा कमाता है। यह एक व्यवसाय है

DHIRAJ SIR-AMBA

-:TYPES OF BUSINESS :-

व्यवसाय के कई प्रकार होते हैं, जिन्हें स्वामित्व, आकार या उत्पाद/सेवा की प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। यहाँ कुछ सामान्य प्रकार दिए गए हैं

-:SOLE PROPRIETORSHIP:-

एकल स्वामित्व (*Sole Proprietorship*) एक ऐसा व्यवसाय है जो सिर्फ एक व्यक्ति द्वारा चलाया जाता है। इसमें सभी फैसले और जिम्मेदारियां उसी व्यक्ति के पास होती हैं, और वह पूरा मुनाफा भी खुद ही कमाता है। इस व्यवसाय में मालिक और व्यापार की संपत्ति अलग नहीं होती, यानी व्यापार की किसी भी समस्या का असर सीधे मालिक की व्यक्तिगत संपत्ति पर पड़ सकता है।

Sole Proprietorship is a type of business run by a single person. In this business, all decisions and responsibilities lie with that person, and they earn all the profits. In this type of business, the owner's personal assets and business assets are not separate, meaning any issue related to the business can directly affect the owner's personal property.

PARTNERSHIP

साझेदारी (*Partnership*) एक ऐसा व्यवसाय है जिसे दो या दो से अधिक लोग मिलकर चलाते हैं। इस तरह के व्यवसाय में सभी लोग मुनाफा और जिम्मेदारी को आपस में बांटते हैं। हर व्यक्ति अपनी हिस्सेदारी के हिसाब से लाभ और नुकसान में शामिल होता है। सभी फैसले मिलकर लिए जाते हैं। उदाहरण के लिए, वकील की फर्म, जहां कई वकील मिलकर काम करते हैं, या डॉक्टरों का क्लिनिक, जहां डॉक्टर एक साथ मिलकर काम करते हैं, ये साझेदारी के उदाहरण हैं।

Partnership is a type of business that is run by two or more people together. In this kind of business, all the people share the profits and responsibilities. Each person is involved in the profits and losses according to their shares. All decisions are made collectively. Examples include a law firm, where several lawyers work together, or a clinic run by doctors, where doctors work together as a team.

NOT-FOR-PROFIT ORGANISATIONS

Not-for-profit organisations are those organisations which are established for the purpose of rendering services to its own members or to the society without any profit motive .

लाभ न कमाने वाली संस्थाओं से आशय उन संस्थाओं या संगठनों से है जिनका स्थापना अपने सदस्यों अथवा समाज को सेवा प्रदान करने के उदेश्य से की जाती है। इस तरह की संस्था का उदेश्य लाभ कमाना नहीं हैं।

COMPANY

कंपनी एक बड़ा व्यापार है जिसे कई लोग मिलकर चलाते हैं। यह सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, बल्कि कई लोग मिलकर चलाते हैं कंपनी के मालिक उसे शेयरधारक कहते हैं। ये लोग कंपनी में पैसा लगाते हैं और कंपनी से फायदा कमाते हैं।

उदाहरणरू

जैसे *Apple, Google* या *Coca-Cola* ये बड़ी कंपनियाँ हैं जहाँ बहुत सारे लोग पैसे लगाते हैं, ?

A company is a large business run by multiple people. It is not run by just one person, but by several people together. The owners of a company are called shareholders. These people invest money in the company and earn profits from it.

Examples:

*Companies like Apple, Google, **or** Coca-Cola are large companies where many people invest money.*

COOPERATIVE

सहकारी (*Cooperative*) एक ऐसा व्यवसाय होता है जो उन लोगों के लाभ के लिए काम करता है, जो इसके सेवाओं का उपयोग करते हैं। इसे एक समूह द्वारा चलाया जाता है, और इसमें सभी सदस्य मिलकर फैसले लेते हैं और लाभ को आपस में बांटते हैं। इस प्रकार के व्यवसाय में सदस्यों का मुख्य उद्देश्य एक–दूसरे की मदद करना और लाभ साझा करना होता है। उदाहरण के लिए, क्रेडिट यूनियन एक सहकारी संगठन है, जहां लोग पैसे जमा करते हैं और एक दूसरे को लोन प्रदान

DHIRAJ SIR-AMBA

करते हैं, और किसानों के सहकारी संगठन में किसान मिलकर अपनी उपज बेचते हैं और एक साथ सेवाओं का लाभ उठाते हैं।

A cooperative is a business that works for the benefit of those who use its services. It is run by a group of people, and all members make decisions together and share the profits. The main purpose of such businesses is to help each other and share the benefits. For example, a credit union is a cooperative organization where people deposit money and provide loans to each other, and in farmers' cooperatives, farmers work together to sell their produce and benefit from services collectively.

-:ONLINE BUSINESS:-

ऑनलाइन व्यवसाय (*Online Business*) एक ऐसा व्यवसाय होता है जो मुख्य रूप से इंटरनेट पर चलाया जाता है। इसमें ग्राहक और व्यापारी दोनों ऑनलाइन माध्यम से जुड़ते हैं, और उत्पाद या सेवाएं इंटरनेट के जरिए बेची जाती हैं। इस तरह के व्यवसाय में दुकान खोलने की जरूरत नहीं होती, और इसे घर से भी चलाया जा सकता है।

Online Business is a type of business that operates mainly through the internet. In this, both the customer and the seller connect via online means, and products or services are sold through the internet. Such businesses do not require a physical shop and can be run from home as well.

उदाहरण

⇒ ई–कॉमर्स वेबसाइट्स जैसे *Amazon, Flipkart*, जहाँ लोग ऑनलाइन सामान खरीदते और बेचते हैं।

⇒ ऑनलाइन कंसल्टिंग जैसे हेल्थ, एजुकेशन या फाइनेंस से जुड़ी सलाह इंटरनेट के माध्यम से देना।

⇒ डिजिटल सेवाएँ जैसे ग्राफिक डिजाइनिंग, वीडियो एडिटिंग, कंटेंट राइटिंग आदि।

INTEREST ON LOAN–ऋण पर ब्याज

लोन पर ब्याज (*Interest on Loan*) का अर्थ है जब कोई व्यक्ति या संस्था किसी बैंक या वित्तीय संस्थान से धन उधार लेती है, तो उसे उस उधार ली गई राशि (मूलधन) के साथ–साथ एक अतिरिक्त राशि भी चुकानी होती है, जिसे ब्याज कहा जाता है। यह ब्याज, उधार ली गई राशि पर एक निश्चित दर के अनुसार, एक निर्धारित अवधि के लिए लगाया जाता है। *The meaning of Interest on Loan is when an individual or organization borrows money from a bank or financial institution, they are required to repay not only the borrowed amount (called the principal) but also an additional amount known as interest. This interest is charged on the borrowed amount at a fixed percentage rate for a specified period of time.*

उदाहरण के लिए, यदि आपने ₹1,00,000 का लोन 7 % वार्षिक ब्याज दर पर एक वर्ष के लिए लिया है, तो वर्ष के अंत में आपको ₹107,000 चुकाने होंगे, जिसमें ₹7,000 ब्याज होगा।

COST- लागत

किसी चीज़ को पाने या बनाने में खर्च किया गया पैसा।

"The money spent to get or produce something is called cost.

अपने शब्दों में :- कच्चे माल को पक्के माल मे परिवर्तित करने के लिए या वस्तु का विक्रय योग्य बनाने के लिए जो खर्च किया जाता है। उसे लागत (*Cost*) कहते है।

The expense incurred to convert raw materials into finished goods or to make a product ready for sale is known as cost."

उदाहरण

⇒ अगर आपने एक किताब ₹200 में खरीदी, तो उस किताब की *cost* ₹200 है।

⇒ अगर एक कंपनी एक प्रोडक्ट बनाने में ₹50 खर्च करती है, तो उसकी *cost* ₹50 है।

PROFIT- लाभ

लाभ (*Profit*) वह पैसा होता है जो किसी व्यक्ति या व्यवसाय को उसकी आय और खर्चों के बीच के अंतर से मिलता है। सरल शब्दों में, लाभ वह राशि है जो किसी चीज़ को बेचने या सेवा देने के बाद बचती है, जब सारे खर्चे जैसे सामान बनाने की लागत, वेतन, टैक्स आदि को घटा दिया जाता है। उदाहरण के लिए, अगर आपने कोई सामान ₹10,000 में

DHIRAJ SIR-AMBA

खरीदा और उसे ₹12,000 में बेचा, तो आपका लाभ ₹2,000 हुआ। इसका मतलब है कि आपने अपने खर्चों से ज्यादा पैसे कमाए। *Profit is the money that a person or business earns from the difference between income and expenses. In simple terms, profit is the amount left after selling something or providing a service, once all expenses such as the cost of making the product, wages, taxes, etc., are subtracted. For example, if you bought an item for ₹10,000 and sold it for ₹12,000, your profit would be ₹2,000. This means you earned more money than your expenses.*

Profit = income - expenditure

GAIN:-

Commerce में *Gain* (गेन) का मतलब होता है — कोई अतिरिक्त लाभ (*Extra Benefit*) जो सामान्य व्यापारिक कामकाज से नहीं, बल्कि किसी अन्य विशेष कारण या घटना से होता है। जबकि *Profit* (प्रॉफिट) वह लाभ है जो नियमित व्यापारिक गतिविधियों जैसे — सामान खरीदना और बेचना — से होता है। उदाहरण के लिए, अगर कोई पुरानी मशीन ₹10,000 में बेची जाए जबकि उसकी कीमत बुक्स में ₹8,000 लिखी थी, तो ₹2,000 का जो फायदा हुआ, उसे *Gain* कहा जाएगा, क्योंकि यह सामान्य बिक्री से नहीं बल्कि संपत्ति (*Asset*) बेचने से मिला। लेकिन अगर आप सामान ₹8,000 में खरीदकर ₹10,000 में बेचते हैं, तो ₹2,000 का जो फायदा है, वह *Profit* कहलाएगा। यानी *Profit* नियमित कारोबार से होता है, जबकि *Gain* आकस्मिक या कभी–कभी होने वाला लाभ होता है।

BILLS PAYBLE:-

देय बिल (*Bills Payable*) का मतलब है ऐसा बिल या कागज़ जिसमें लिखा होता है कि किसी व्यक्ति या व्यापार को किसी और को पैसा देना है, क्योंकि उसने सामान या सेवा उधार में ली है। जब वह सामान या सेवा मिली, तब पैसे नहीं दिए गए थे, लेकिन बाद में देने का वादा किया गया है। जो सामान या सेवा देता है, उसे विक्रेता (*seller*) या आपूर्तिकर्ता (*supplier*) कहा जाता है। इसलिए देय बिल को ऐसा बिल भी कह सकते हैं जो अभी तक चुकाया नहीं गया है।

*Bills Payable means a bill or document that shows a person or business has to pay money to someone else because they have taken goods or services on credit. When the goods or services were received, the payment was not made at that time, but there was a promise to pay later. The person or company who gives the goods or services is called the seller **or** supplier. So, bills payable are also called unpaid bills that are yet to be paid.*

BILLS RECEIVABLES:-

Bills Receivable का मतलब होता है वह बिल या रकम जो किसी व्यवसाय को भविष्य में किसी और से प्राप्त करनी होती है, क्योंकि उसने उधार पर सामान या सेवाएँ दी हैं। जब एक व्यवसाय किसी ग्राहक को सामान या सेवा देता है और पैसे बाद में लेने होते हैं, तो वह बिल *Bills Receivable* कहलाता है। यह एक प्रकार की देयता (*asset*) होती है, जिसका मतलब है कि यह राशि व्यापार को भविष्य में प्राप्त होगी। उदाहरण के लिए, अगर एक व्यापारी ने किसी ग्राहक को ₹10,000 का सामान उधार दिया है, तो वह ₹10,000 का बिल व्यापारी के लिए *Bills Receivable* होगा।

*Bills Receivable means the bill or amount that a business is supposed to receive from someone in the future because it has provided goods or services on credit. When a business gives goods or services to a customer and the payment is to be received later, that bill is called Bills Receivable. It is a type of **asset**, meaning the amount will be received by the business in the future. For example, if a merchant has given goods worth ₹10,000 to a customer on credit, the ₹10,000 bill becomes Bills Receivable for the merchant.*

BANK-OVERDRAFT- बैंक अधिविकर्ष

बैंक ओवरड्राफ्ट एक सुविधा है, जो आपको अपने बैंक खाते में जितना पैसा है, उससे ज्यादा निकालने की अनुमति देती है। यानी अगर आपके खाते में पैसे कम हैं, तो भी आप उससे ज्यादा पैसा निकाल सकते हैं, लेकिन यह पैसा आपको बाद में बैंक को लौटाना होता है। यह एक तरह का ऋण (*Loan*) होता है, जिसे आपको समय रहते चुकाना पड़ता है। इस पर बैंक ब्याज भी लेता है। यह सुविधा कुरंट अकाउंट (*Current Account*) में होती है, क्योंकि यह एक प्रकार की लायबिलिटी (*Liability*) होती है, यानी आपको वापस चुकानी होती है। इसे बैंक उधार के रूप में माना जाता है और इसे

DHIRAJ SIR-AMBA

आपके खाते में रिकॉर्ड किया जाता है। *A bank overdraft is a facility that allows you to withdraw more money than what is available in your bank account. In other words, if your account balance is low, you can still withdraw more money, but this amount needs to be repaid to the bank later. It is a type of* ***loan*** *that must be repaid within a certain period. The bank also charges interest on this amount.*

ACCOUNT :-

Account (अकाउंट) का मतलब है किसी व्यक्ति, वस्तु, खर्च या आय से जुड़े सभी पैसों के लेन–देन को एक ही जगह पर लिखना ताकि यह पता चल सके कि पैसा देना है या लेना है, खर्च हुआ या कमाई हुई। व्यापार में रोज़ बहुत सारे लेन–देन होते हैं, इसलिए हर व्यक्ति, वस्तु या खर्च के लिए अलग–अलग खाता (*Account*) बनाया जाता है, जिससे सारी जानकारी साफ और व्यवस्थित रहे। उदाहरण के तौर पर अगर किसी ग्राहक "रवि" से बार–बार लेन–देन होता है, तो उसके लिए "रवि का खाता" बनाया जाता है जिसमें यह लिखा जाता है कि रवि को कितना सामान बेचा गया, कितना पैसा मिला या बाकी है। इस तरह *Account* बनाने से हमें व्यापार में हर व्यक्ति या चीज़ के साथ हुए सभी पैसों के लेन–देन की पूरी जानकारी आसानी से मिल जाती ळें

Account means recording all money transactions related to any person, thing, expense, or income in one place so that it can be known whether money is to be given or received, spent, or earned. In business, many transactions take place every day, so a separate account is made for each person, thing, or expense to keep all information clear and organized. For example, if a customer named "Ravi" has frequent transactions, an "Account of Ravi" is made in which it is written how much goods were sold to him, how much money was received, or how much is still due. In this way, by maintaining accounts, we can easily know all the money transactions made with every person or thing in the business.

BOOKS OF ACCOUNT:-

Books of Account उन रजिस्टरों या किताबों को कहा जाता है जिनमें व्यवसाय के सभी वित्तीय लेन–देन को दर्ज किया जाता है। इन पुस्तकों का उद्देश्य व्यापार के लेन–देन को व्यवस्थित और सही तरीके से रिकॉर्ड करना होता है, ताकि व्यवसाय की वित्तीय स्थिति का सही आकलन किया जा सके। इनमें जर्नल, लेजर, कैश बुक, बैंक बुक, और खाता पुस्तिका शामिल होती हैं, जो व्यापार के सभी लेन–देन को व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड करती हैं।

Books of Account refers to the registers or books where all the financial transactions of a business are recorded. The purpose of these books is to systematically and accurately record the business's transactions so that the financial position of the business can be assessed correctly. These include the journal, ledger, cash book, bank book, and account books, which record all transactions of the business in an organized manner.

DHIRAJ SIR-AMBA